मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़)

# सामाजिक विज्ञान (C-102)

## स्तर-ग (कक्षा-8 के समतुल्य)


राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62

नोएडा-201309 (उ.प्र.)

© राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

2016 ( प्रतियाँ)

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201309 द्वारा प्रकाशित

## सलाहकार समिति

**अध्यक्ष**
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

**निदेशक (शैक्षिक)**
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

**सहायक निदेशक (शैक्षिक)**
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

## पाठ्यक्रम निर्माण समिति

**श्रीमती निशात फारूख**
पूर्व निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र
नई दिल्ली

**श्री बी.पी. ध्यानी**
पी.जी.टी. (राजनीति विज्ञान)
राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय
दिल्ली सरकार

**डॉ. कन्हैया झा दिवाना**
उप प्राचार्य, दिल्ली सरकार

**श्री लायक राम मानव**
पूर्व समन्वयक, सामग्री निर्माण
राज्य संसाधन केन्द्र, लखनऊ

**श्री वीरेन्द्र मुलासी**
पूर्व समन्वयक, सामग्री निर्माण
राज्य संसाधन केन्द्र, देहरादून

## संपादक मंडल

**श्री लायक राम मानव**
पूर्व समन्वयक, सामग्री निर्माण
राज्य संसाधन केन्द्र, लखनऊ

**श्री वीरेन्द्र मुलासी**
पूर्व समन्वयक, सामग्री निर्माण
राज्य संसाधन केन्द्र, देहरादून

**श्री बी.पी. ध्यानी**
पी.जी.टी. राजनीति विज्ञान
राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय,
दिल्ली सरकार

**श्री हरपाल सिंह**
पूर्व वरिष्ठ सलाहकार
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान
नोएडा

**श्री नरेन्द्रपाल सिंह**
पूर्व प्राचार्य
दिल्ली सरकार

**श्री विवेक सिंह**
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

## पाठ लेखन

**श्री लायक राम मानव**
पूर्व समन्वयक, सामग्री निर्माण
राज्य संसाधन केन्द्र, लखनऊ

**श्री वीरेन्द्र मुलासी**
पूर्व समन्वयन, सामग्री निर्माण
राज्य संसाधन केन्द्र, देहरादून

**डॉ. कन्हैया झा दिवाना**
उप-प्राचार्य
दिल्ली सरकार

**श्री बी.पी. ध्यानी**
पी.जी.टी. (राजनीति विज्ञान)
राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय,
दिल्ली सरकार

**डॉ. अनीता देवराज**
पूर्व प्राचार्य
डी.ए.वी. बहादुरगढ़

**श्री विवेक सिंह**
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

## पाठ्यक्रम समन्वयक

**श्री विवेक सिंह**
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

## रेखा चित्रांकन

**श्री नवल किशोर**
स्वतंत्र चित्रकार
नई दिल्ली

## डी.टी.पी. कार्य

**मल्टी ग्राफिक्स**
8/101, डब्ल्यू ई ए, करोल बाग
नई दिल्ली - 110005

# आपसे दो बातें

*प्रिय शिक्षार्थी,*

*प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में समाज के उपेक्षित वर्गों को साक्षर बनाने के अभियान के सफल प्रयासों से प्रेरित होकर भारत सरकार ने समाज के नवसाक्षरों को जीवनपर्यन्त शिक्षा उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया है। इस कार्यक्रम में समाज के 15 साल से अधिक आयु के वे उपेक्षित वर्ग, जो प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में बुनियादी शिक्षा अर्जित कर चुके हैं या अनौपचारिक शिक्षा से वंचित रहे हैं और जीवनपर्यन्त अध्ययन के अवसरों का लाभ उठाने में रुचि रखते हैं, को सम्मिलित किया गया है। उनके व्यक्तिगत, सामाजिक, तथा बौद्धिक स्तरों का विकास करके एक अध्ययनरत समाज के निर्माण की परिकल्पना की गई है।*

*इस योजना में जो नवसाक्षर प्राथमिक शिक्षा से आगे अनौपचारिक शिक्षा की पद्धति से माध्यमिक स्तर के बराबर शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समतुल्यता कार्यक्रम चलाने का प्रयास किया जा रहा है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा नवसाक्षरों को समतुल्यता केन्द्रों पर शिक्षा प्रदान की जाएगी।*

*इस कार्यक्रम के लिए विशेष रूप से विभिन्न स्तरों 'क', 'ख' तथा 'ग' (कक्षा 3, 5 तथा 8 के समतुल्य) पर स्व-अध्ययन के लिए पठन-पाठन सामग्री तैयार करने का कार्य राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान ने किया है। सामग्री की विशेषता है कि यह नवसाक्षरों में स्वयं सीखने की प्रवृत्ति पैदा करेगी, विकास के कार्यक्रमों से जुड़ने में रुचि उत्पन्न करेगी और उनमे स्वयं अध्ययन की प्रवृत्ति पैदाकर समय के सदुपयोग हेतु शैक्षिक वातावरण का निर्माण करेगी। साथ ही यह सूचना के क्षेत्र में नई वैज्ञानिक नकनीक से जुड़ी जानकारियाँ भी उपलब्ध करायेगी।*

*उम्मीद है कि आपने स्तर 'क' तथा स्तर 'ख' की पुस्तकें पढ़ी होंगी। प्रस्तुत पुस्तक कक्षा 8 के समतुल्य है। पुस्तक के निर्माण में शिक्षार्थियों की दक्षताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखा गया है तथा आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। पुस्तक में कुल 21 पाठ हैं।*

*यह स्वअध्ययन सामग्री हमें हमारे अतीत से परिचित कराएगी। मानव के विकासक्रम में हमने किस प्रकार अनेक पड़ाव पार किए हैं, इसकी झलक इतिहास के अंदर आपको देखने को मिलेगी। साथ ही भारत किस प्रकार भौगोलिक विविधताओं का देश है। इसका अध्ययन हम भूगोल के अंतर्गत करेंगे। इसके अलावा भारत में होने वाली विविध आर्थिक क्रियाकलापों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। राजनीति विज्ञान के अंतर्गत भारत की शासन व्यवस्था तथा उसकी विशेषताओं से भी आप परिचित होंगे।*

*मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस सामग्री को रुचिकर और उपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं सभी शिक्षार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। आशा है शिक्षार्थी तथा पाठक पुस्तक को पढ़ने में रुचि लेंगे। सामग्री में सुधार के लिए आपके विचार और अनुभवों का स्वागत है।*

*शुभकामनाओं सहित,*

***पाठ्यक्रम निर्माण समिति***

# विषय सूची


| क्रम सं. | पाठ का नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 0. | सामाजिक विज्ञान : एक परिचय | 1-8 |
| 1. | मानव-सभ्यता का विकास | 9-24 |
| 2. | वैदिक सभ्यता | 25-32 |
| 3. | वैदिक सभ्यता के बाद का जीवन | 33-46 |
| 4. | मौर्यों के बाद की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था | 47-66 |
| 5. | दिल्ली सल्तनत | 67-78 |
| | **मूल्यांकन पत्र-1** | **79-80** |
| 6. | मुगल व उनके बाद | 81-96 |
| 7. | ब्रिटिश कंपनी का शासन | 97-116 |
| 8. | ब्रिटिश राज और स्वतंत्र भारत | 117-128 |
| 9. | हमारा भारत | 129-160 |
| 10. | भारत में खनिज और ऊर्जा सम्पदा | 161-182 |
| | **मूल्यांकन पत्र-2** | **183-184** |
| 11. | भारत में कृषि | 185-204 |
| 12. | उद्योगों का विकास | 205-224 |
| 13. | आवागमन और दूर-संचार के साधन | 225-250 |
| 14. | जनसंख्या विस्फोट और जनसंख्या नियंत्रण | 251-264 |
| 15. | आर्थिक जीवन | 265-280 |
| | **मूल्यांकन पत्र-3** | **281-282** |
| 16. | शासन-व्यवस्था के स्वरूप | 283-300 |
| 17. | भारतीय संविधान | 301-326 |
| 18. | राज्य सरकार | 327-342 |
| 19. | लोकतंत्र और स्थानीय स्वशासन | 343-358 |
| 20. | हमारे बढ़ते कदम | 357-374 |
| | **मूल्यांकन पत्र-4** | **375-376** |
| | पाठ्यक्रम | 377-384 |
| | प्रश्न का प्रारूप एवं नमूना प्रश्न पत्र | 385-394 |

0

# सामाजिक विज्ञान : एक परिचय

कल्पना कीजिए कि आपके पास एक टाइम-मशीन हैं और आप अपने आपको समय में पीछे ले जाकर उस समय पर चले जाते है जब आपके दादा-दादी बच्चे थे। आपने पाया कि आपका मकान और उसके आस-पास का वातावरण बहुत ही भिन्न है। अगर आप और भी पीछे जाते हैं तो आपको आश्चर्य और हैरानी होगी कि उस समय का खाना-पीना, पहनावा यहाँ तक कि भाषा, जिसे कि आपके पूर्वज प्रयोग कर रहे थे काफी भिन्न है। क्या यह जानना आपके लिए रोचक नहीं होगा कि भूतकाल में क्या हुआ था? क्या आप महसूस करते हैं कि हम अब भी अपने आज को भूतकाल से जोड़कर देख सकते हैं यह सब क्या एक ऐसा रहस्य नहीं लगता जिसे हम सुलझा सकते हैं। ये सब करने के लिए हम उन स्रोतों का प्रयोग करेंगे जिससे हम समझ सकें कि मानव समाज ने किस प्रकार पूर्व ऐतिहासिक काल से आजतक कितनी प्रगति की हैं।

## उद्देश्य

**इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :**

- सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान की भूमिका समझा सकेंगे;
- इन सभी विषयों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- मानव समाज के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन कर सकेंगे और
- वर्तमान समाज की चुनौतियों और अवसरों की पहचान कर सकेंगे।

## 0.1 सामाजिक विज्ञान : एक शैक्षिक अनुशासन के रूप में

जैसा कि नाम दर्शाता है सामाजिक विज्ञान हमारे समाज से सम्बन्धित है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी पहलुओं को समझने के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं के समाधान का भी प्रयास करना होता है। इसके ज्ञान का दायरा बहुत बड़ा है और इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के विषय शामिल हैं। कुछ प्रमुख विषय क्षेत्र जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं वो इस प्रकार हैं–

- इतिहास
- पुरातत्व विज्ञान
- भूगोल
- राजनीति विज्ञान
- समाजशास्त्र
- अर्थशास्त्र

सामाजिक विज्ञान की यह पाठ्यसामग्री उपरोक्त विषयों से ही संबंधित है। इस इकाई में हम सामाजिक विज्ञान को समझने की कोशिश करेंगे। इस इकाई के माध्यम से हम सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के महत्व को तो जानेंगे कि ही साथ ही यह भी जानेंगे यह सब हमारे जीवन से कैसे सम्बन्धित है। हम देखेंगे कि, मानव प्राणी के रूप में हम गुफा में रहने वाली अवस्था से लेकर अनेक अवस्थाओं से गुजरते हुए कैसे हमने विकास किया और आज नगरों के आधुनिक विश्व में रहने योग्य बनें। हम इतिहास को सरल रूप में अपने अतीत के बारे में तथ्यों के संकलन के रूप में नही पढ़ेंगे बल्कि उससे सीखेंगे भी। सामाजिक विज्ञान हमें इस बात में भी सहायता प्रदान करता है कि हम कैसे विभिन्न विषयों के बीच अंतर्संबंध बनाने की क्षमता अर्जित कर सकते हैं। हम यह भी सीखेंगे, कि युगों के बीतने के साथ हम विकास की प्रक्रियाओं और घटनाओं के बीच संबंधों की व्याख्या कैसे करें यह हमारी इस बात में सहायता करेगा कि हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संबंधों को कैसे समझा जाए? आइए इन विषयों का और अधिक अध्ययन करें ताकि हम अपने जीवन पर इनके प्रभावों को समझ सकें।

## 0.2 सामाजिक विज्ञान का अध्ययन

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शुरू में केवल एक ही विषय हुआ करता था, वह था दर्शनशास्त्र। दर्शनशास्त्र का मूल अभिप्राय होता है ज्ञान या बुद्धिमत्ता के प्रति प्रेम। बाद में जैसे-जैसे जानकारी बढ़ने लगी और इसका विस्तार होने लगा तो हमनें इसे विभिन्न शाखाओं में वर्गीकृत किया। इसीलिए विज्ञान और सामाजिक विज्ञान अलग-अलग किए गए। ये दोनो विषय हमारे यथार्थ के पहलुओं को अलग-अलग दर्शाते हैं। यदि पर्यावरण विज्ञान प्राकृतिक और भौतिक विश्व के बारे में ज्ञान की बात करता है तो दूसरी ओर सामाजिक विज्ञान हमें समाज और स्वयं इंसानों के रहन-सहन के बारे में सिखाता है। चलो, सामाजिक विज्ञान को जानने के लिए हम अपना अध्ययन इतिहास से शुरू करते हैं।

## क. इतिहास और पुरातत्व विज्ञान

इतिहास क्या है? इतिहास घटनाओं का एक ऐसा विवरण है, जो अतीत में घटित हो चुकी हैं। यह वास्तविक लोगों और वास्तविक घटनाओं के बारे में होता है। इसका मात्र विचारों तथा आदर्शों से संबंध नही होता और ना ही इस बात से इसका संबंध होता है कि क्या होना चाहिए था? बल्कि यह एक अध्ययन है जो बताता है कि अतीत में क्या हुआ था। इतिहास व्यक्ति विशेष के बारे में बात नही करता वरन यह राष्ट्रों तथा समाजों से सम्बन्धित है। यह किसी राजा या रानी तक ही सीमित नही होता बल्कि समस्त मानव प्राणियों के बारे में होता है। इसमें हर एक इंसान नर या नारी, अमीर या गरीब, धर्म या जाति के मत के बिना सभी सम्मिलित होते हैं। क्या आपने कभी सोचा कि हमारे पूर्वजों का प्राचीन काल में क्या हुआ था? आपको उनके बारे में इसकी जानकारी इस पुस्तक में मिलेगी। इस विषय को पढ़ते समय जो चीज आपको रोचक लगे उसे आप एक पुस्तिका में लिख लें। उसके बाद आप इंटरनेट और पुस्तकालय में जाकर उसके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त कराने में हम भी आपकी मदद करेंगे।

### हम इतिहास क्यों पढ़ते हैं?

इतिहास का अध्ययन हमें अपनी जड़ों को, अपनी ताकत को तथा अपनी उपलब्धियों को जानने में हमारी सहायता करता है। इतना ही नहीं यह हमें गर्व के भाव के साथ-साथ दिशा भी प्रदान करता है। जिसें हम प्रगति कहते हैं। उसका अस्तित्व ही नही रह जाएगा यदि हमें हमारे अतीत की समझ और उसका उचित ज्ञान हमारे पास नही होगा। यह एक सामान्य विश्वास है कि इतिहास केवल अतीत की बात करता है, परन्तु ऐसा नहीं है। वास्तव में, हमारे अतीत के पास वर्तमान और भविष्य को लेकर अनेक महत्वपूर्ण सबक होते हैं। इतिहास इस विरासत को सावधानी से दर्ज करता है, जो हमारे जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालतें हैं। जब हम सोचते है कि हम अपने अतीत को कैसे जान सकते है तो हमें पुरातत्व विज्ञान से जुड़ना होता है अक्सर ये अतीत की गतिविधियां और उपलब्धियां गर्व का भाव पैदा करती हैं। आइए, हम इन्हें अपनी भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखें।

### पुरातत्व विज्ञान

पुरातत्व विज्ञान अध्ययन का एक ऐसा क्षेत्र है जो हमें प्राचीन काल के समाज तथा संस्कृति के विज़य में जानकारी देता है। इन सबकी जानकारी हमें उन सब भौतिक अवशेषों में मिल सकती हैं जो खुदाई से प्राप्त होती हैं। जैसे कलातथ्य, सवाधान, टूटी-फूटी इमारतें, स्मारक इत्यादि। इनका अध्ययन पुरातत्वविदों द्वारा किया जाता हैं। वे इन अवशेषों की व्याख्या करके ये जानकारी उपलब्ध कराते है कि यह वस्तुएं कौन से समय से सम्बन्धित हैं। पुरातत्व विज्ञान में लिखित अभिलेखों को भी सम्मिलित किया जाता है जो बहुत प्राचीन होते हैं। जिन्हें समझना या पढ़ पाना सरल नहीं होता है। वास्तव में यह स्रोत हमें कहीं अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक सूचना देते हैं। अधिक समय तक यह अवशेष जमीन में दबे होते हैं और उनको निकालने के लिए हमें खुदाई करनी पड़ती है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, कालीबंगन, धौलावीरा, नालंदा

कुछ ऐसे स्थान हैं जिनकी खुदाई करके हमें अनेक बहुमुल्य वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। ऐसी खुदाइयों के बारे में ज्यादातर जानकारी हमें समाचार पत्रें से प्राप्त होती है। विगत दशकों में गुजरात के निकट समुद्र के भीतर एक बहुत ही आश्चर्यजनक खोज हुई है। इस खोज के अनुसार यह माना जाता है यह जगह भगवान श्रीकृष्ण की नगरी द्वारका से सम्बन्धित है। राखी गढ़ी जो कि हरियाणा में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरातत्व स्थल है वह भी हमनें कुछ वर्ष पहले ही ढूंढ निकाला है।

इन पुरातत्व स्थलों का एक सफर आपको बीते युगों में ले जाएगा। जब भी आपको कोई अवसर मिले आपको इन पुरातत्व स्थलों को देखना चाहिए। भारत में ही नहीं दूसरे देशों में भी ऐसे स्थल मिलें हैं। पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेख, स्तंभ, धातु के पत्रक, सिक्के, मुद्राएँ, स्मारक, औजार, मिट्टी के बर्तन, खिलौने, चित्र आदि भी सम्मिलित किए जाते हैं और कलात्मक कार्य जैसे चित्रकारी, मूर्तियां, वास्तुशिल्प इत्यादि भी। ये हमें समय विशेष की संस्कृति के बारे में बहुत कुछ बताते हैं।

**क्या आप जानते हैं?**

भारत का पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ASI) संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आता है। यह एक ऐसा प्रमुख संगठन है जो पुरातात्विक शोधों और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण देने के उत्तरदायित्व को निभाता हैं। एएसआई का प्रमुख दायित्व है राष्ट्रीय महत्व के अवशेषों, पुरातत्व स्थलों और प्राचीन स्मारकों की देखभाल करना। प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों की देखभाल के लिए पूरे देश को 24 मंडलों में विभाजित किया गया हैं। संगठन के पास कुशल पुरातत्वविदों, संरक्षकों, पुरा-अभिलेखविदों, वास्तुकारों और वैज्ञानिकों का एक विशाल कार्यबल है जो पुरातात्विक गतिविधियों तथा शोध कार्यों को संचालित और संपादित करता है।

और अधिक जानकारी के लिए आप इस संगठन की वेबसाइट www.asi.nic.in पर जा सकते हैं।

## पाठगत प्रश्न 0.1

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–**

   (संस्कृति, समाज, हरियाणा, गुजरात)

   (क) सामाजिक विज्ञान हमारे ............................ से संबंधित है।

   (ख) पुरातत्व विज्ञान प्राचीनकाल के समाज तथा ............................ के विषय में जानकारी देता है।

   (ग) द्वारका ............................ में स्थित है।

   (घ) राखीगढ़ी ............................ में स्थित है।

2. उन पांच स्रोतों की सूची बनाइए जो हमें अतीत के अध्ययन में सहायता प्रदान कर सकती हैं।

## ख. भूगोल

इतिहास और पुरातत्व विज्ञान का अध्ययन तब तक अधूरा रहता है जब तक कि किसी स्थान विशेष के भूगोल को जानने का प्रयास ना किया जाए। भूगोल में पृथ्वी के भू-दृश्यों, लोगों, स्थानों तथा पर्यावरण का अध्ययन किया जाता है। सरल शब्दों में यह उस विश्व के बारे में जानकारी देता है जिसमें हम रहते हैं। भूगोल इस अर्थ में विलक्षण है कि यह सामाजिक विज्ञानों (मानव भूगोल) और प्राकृतिक विज्ञानों (भौतिक भूगोल) के बीच एक पुल का काम करता है। भूगोल किसी समाज के इतिहास और जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पूरे विश्व के भू-दृश्यों, अर्थव्यवस्थाओं, राजनीतिक व्यवस्थाओं और संस्कृतियों के बीच के अंतरों को पहचानने में हमारी सहायता करता है। यह उनमें परस्पर संबंध स्थापित करने में भी हमारी सहायता करता हैं। भूगोल ज्ञान के अन्य क्षेत्रें के संबंध में एक आदर्श रूप-रेखा भी प्रदान करता है। यदि हम किसी देश के भूगोल को जानते है तो हम समझ सकते हैं कि उस देश के इतिहास में क्या घटित हुआ होगा। आदिम मनुष्य ने तीर-कमान और अन्य छोटे औजार बनाए। भूगोल के अध्ययन से ही हमें यह ज्ञात होता है कि क्यों हिमयुग के बाद वातावरण में कोई बदलाव आया है जिसके परिणामस्वरूप कई घने जंगल घास के मैदानों में बदल गए। क्या आप सोच सकते हैं कि क्या हुआ होगा? इसी कारण से घास खाने वाले पशुओं जैसे कि हिरण, बकरी, भेड़ और बारहसिंगा की जनसंख्या बढ़ गई। आप यह तो जानते होंगे कि यह जानवर तेज भागते हैं। इन तेज दौड़ने वाले जानवरों का शिकार भारी हथियारों से होना मुमकिन नही था। इसके लिए हल्के हथियार चाहिए थे तभी उस युग का मनुष्य जीवित रह सकता था।

क्या आप जानते हैं कि भारत में गंगा का मैदान बहुत ही उपजाऊ माना जाता है। यह इसलिए क्योंकि गंगा जैसी बड़ी नदी अपने साथ बहुत स्वच्छ पानी लाती है जो कि पीने और सिंचाई के काम आता है। साथ ही इसके द्वारा जो मिट्टी जमा की गई वह बहुत ही उपजाऊ है। यही एक वजह है कि इस क्षेत्र में मौर्य, गुप्त, और मुगल जैसे बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित हुए। पर्याप्त मात्र में लोहे की उपलब्धता के कारण इन साम्राज्यों का विस्तार हुआ।

## ग. राजनीति विज्ञान

सरकार एक ऐसा शब्द है जिससे आप भली-भांति परिचित होंगे। ये शब्द आपने कई बार पढ़ा होगा या रेडियो पर सुना होगा। क्या आपने कभी सोचा है कि सरकार क्या होती है। क्या आप जानते हैं कि यह हमारे जीवन में क्या भूमिका निभाती है और ये क्या महत्वपूर्ण कार्य लोगों के लिए करती है। किसी देश की सरकार कानून बनाती है और उस देश में रहने वाले लोगों को उन कानूनों का सम्मान करना होता है। लोकतंत्र में लोग सरकार को चुनकर उसे शक्ति प्रदान करते हैं। इस तरीके से लोग उस देश की संसद की सहायता करते हैं जो कानून बनाती है। जबकि एक राजतंत्र में यह राजा या रानी ही निर्णय लेने में समर्थ होते हैं और उन्हें जनता पर लागू करते हैं। सामाजिक विज्ञान इस बात को भी बताता है कि हमें कैसे शासित किया जाना

हैं। यह इस बात को भी समझने में सहायता करता है कि किसी राष्ट्र या सरकार को चलाने में हम जैसे लोगों की क्या भूमिका है। इस अनुशासन को राजनीति विज्ञान कहा जाता हैं।

राजनीति विज्ञान एक ऐसा सामाजिक विज्ञान हैं जो राजनीति के सिद्धांत और व्यवहार से सबन्धित होता हैं तथा राजनीतिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवहार के विश्लेषण पर बल देता है। यह हमें बताता हैं कि सरकार का चुनाव कैसे किया जाता है। उनमें हम राजनीतिक घटनाओं और परिस्थितियों के बीच संबंधों का अध्ययन करते हैं। जिनसे राजनीति के सामान्य सिद्धांतों के उन तरीकों को समझने का प्रयास करते हैं जिनसे राजनीति का संसार कार्य करता है। इसमें सम्मिलित होता है सरकारों पर अध्ययन, लोकनीतियां, राजनीतिक प्रक्रियाएँ, व्यवस्थाएँ तथा राजनीतिक व्यवहार।

### घ. समाजशास्त्र

समाजशास्त्र सामाजिक विज्ञान का एक और अन्य बहुत महत्वपूर्ण अंश हैं। यह सामाजिक संदर्भ में मानव के व्यवहार के अध्ययन से संबंधित है। समाजशास्त्र मानव समूहों के अध्ययन पर केंद्रित होता हैं। समाजशास्त्र यानी सोशोलॉजी लैटिन भाषा के एक शब्द सोशोलोजई (Sociologie) से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ हैं अपने साथी के बारे में अध्ययन करना। समाजशास्त्र किसी समाज के ढांचे को समझने की अपेक्षा करता है और उसके काम करने के तरीके के बारे में बताता है।

यह इस बात को भी परिभाषित करने और विभिन्न कारणों को समझनें में भी सहायता करता है जिसके कारण हमारे समाज ने कोई आकार लिया। इसके अंतर्गत सम्मिलित होते है प्रजाति, वर्ग, लिंग, संस्कृति, धर्म, आस्थाएँ और सरकार। समाजशास्त्र व्यक्ति और समूह व्यवहारों के उन तरीकों का भी अध्ययन करता है जो हमारे समाज को चलाने पर प्रभाव डालते है।

### ङ अर्थशास्त्र

समाज में रहने का एक अर्थ यह होता है कि हमें अपने जीवन को कैसे संगठित करना है। हमें ये जरूर जानना चाहिए कि हम कम खर्च में कैसे अपनी आय, समय और संसाधनों का प्रयोग कर सकते हैं क्योंकि ये सब सीमित होते हैं। आपको कुछ इस तरीके से अपने समय को व्यवस्थित करना भी सीखना चाहिए ताकि आप चीजों को जैसा चाहते है वैसा उनका प्रबंध कर सके। ठीक इसी प्रकार जब हम अपने घर के लिए कोई बजट बनाते है तो उन स्रोतों का सबसे बेहतर प्रयोग करते है जो हमारे पास उपलब्ध होती है। इस प्रकार हम अनेक समस्याओं से अपने को बचा लेते है। इस अध्ययन को अर्थशास्त्र के नाम से जाना जाता हैं। यह बजट बनाने की अपेक्षा कहीं अधिक बड़ी विद्या है। यह एक ऐसी वैज्ञानिक विधा है जिसमें कोई मनुष्य उत्पादन, उपभोग और धन के बारे में अपनी पसंद तय करता है। यह एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है जो हमारी आवयश्कताओं और उपलब्ध संसाधनों के बीच संतुलन बनाने का तरीका बताता है। इस विषय का अध्ययन तब कहीं अधिक रोचक होगा यदि आप इस अपने वास्तविक जीवन की स्थितियों को ध्यान में रखकर सीखने का प्रयास करेंगे। उन कार्यकलापों में एक कार्यकलाप हो सकता है अपने घर के बजट को तैयार करना या समय सारिणी का निर्माण करना।

उपयुक्त सभी विषय हमें उस संपूर्ण प्रक्रिया को समझने में सहायता प्रदान करते है जिससे मानव की प्रगति और विकास संभव हुआ। इसके लिए हमें फिर अपने अतीत में वापस लौटना होगा। कदम दर कदम हम इस धरती पर मानव प्राणी के विकास के बारे में जानेंगे। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान एक स्वस्थ समाज बनाने में हमें सक्षम बनाता है। यह हमें सिखता है कि समाज के एक अंग के रूप में हम कैसे संतुलन स्थापित करें। इस पुस्तक की अगली इकाइयों में हम भारत के इतिहास, भूगोल, अर्थव्यवस्था व राजनीतिक प्रणाली के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

## पाठगत प्रश्न 0.2

1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-

   (समाजशास्त्र, गंगा, लोग)

   (क) ................................ का मैदान बहुत उपजाऊ है।

   (ख) लोकतंत्र में ................................ सरकार को चुनते हैं।

   (ग) ................................ मानव के व्यवहार के अध्ययन से संबंधित है।

## आपने क्या सीखा

- सामाजिक विज्ञान हमारे समाज से संबंधित है।
- इसके प्रमुख विषय क्षेत्र हैं- इतिहास, पुरातत्व विज्ञान, भूगोल, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र।
- प्रारंभ में केवल दर्शनशास्त्र का अध्ययन होता था। धीरे-धीरे ज्ञान का विकास होने के साथ यह विभिन्न विषयों में बँट गया।
- इतिहास अतीत में घटी घटनाओं का विवरण है।
- भूगोल हमें उस विश्व के बारे में जानकारी देता है जिसमें हम रहते हैं।
- राजनीति विज्ञान किसी राष्ट्र को सक्षम रूप से चलाने के बारे में जानकारी देता है।
- समाजशास्त्र सामाजिक संदर्भ में मानव के व्यवहार का अध्ययन है।
- अर्थशास्त्र व्यक्तिगत के साथ ही संपूर्ण राष्ट्र की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है।

## पाठांत प्रश्न

1. इतिहास और पुरातत्व विज्ञान कैसे जुड़े हुए हैं?

2. इतिहास को समझने में भूगोल कैसे योगदान देता हैं?

3. राजनीति विज्ञान के मुख्य घटकों को बताइए।

4. अर्थशास्त्र के अध्ययन से आप क्या समझते हैं?

## आइए करके देखें

- आप अपने पास के शहर में उस जगह जाए जहां कोई संग्रहालय हो या जहाँ पर प्राचीन वस्तुओं का संग्रह किया हुआ हो और यह जानकारी प्राप्त करें कि यह वस्तुएं किस समय की हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इंटरनेट पर या किसी पुस्तकाल य से भी अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आज के समय में आपको यह सब ज्ञान पुस्तकों, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं से आसानी से उपलब्ध हो सकता हैं। आप अपने आस-पास के क्षेत्रों में फैले ऐसे पुराने किलों एवं अन्य जगहों के बारे में भी जानकारी एकत्र करिए।
- आगरा, नासिक, पटना और कोलकाता बड़ी नदियों के तट पर बसे हुए हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन सभी नगरों में इतिहास का निर्माण हुआ है। व्यापार और प्रशासन के मुख्य केंद्रों के रूप में इन नगरों की समृद्धि के किन्हीं तीन कारणों को बताइए।

## उत्तरमाला

### पाठगत प्रश्न

**0.1**

1. (क) समाज (ख) संस्कृति
   (ग) गुजरात (घ) हरियाणा

2. स्मारक, अभिलेख, स्तंभ, धातु के पत्रक, सिक्के, औजार, मिट्टी के बर्तन आदि।

**0.2**

1. गंगा 2. लोग 3. समाजशास्त्र

### पाठांत प्रश्न

1. इतिहास और पुरातत्व विज्ञान दोनों ही अतीत का अध्ययन करते हैं।

2. इतिहास को उस स्थान विशेष का भूगोल जाने बिना नहीं समझा जा सकता। यह उस विश्व के बारे में जानकारी देता है जिसमें हम रहते हैं। यदि हम किसी देश के भूगोल को जानते हैं तो हम वहाँ के इतिहास को जान सकते हैं।

3. सरकारों पर अध्ययन, लोकनीतियाँ, राजनीतिक प्रक्रियाएँ, व्यवस्थाएं तथा राजनीतिक व्यवहार।

4. अर्थशास्त्र व्यक्तिगत के साथ संपूर्ण संसार की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है।

1

# मानव-सभ्यता का विकास

मानव सभ्यता के इतिहास की जानकारी उत्सुकता का विषय रहा है। आदिमानव का प्रारंभिक जीवन किस प्रकार का था? आदिमानव की गतिविधियाँ कौन सी थीं? कैसे आदिमानव ने अपनी प्रारंभिक अवस्था से विभिन्न चरणों में विकास किया? आदिमानव के सामाजिक जीवन में कृषि का महत्त्व क्या था? उनकी आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक गतिविधियाँ और विश्वास क्या थे। आदिमानव घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करता था। भोजन और शिकार की तलाश में घूमता रहता था। उनके जीवन में पत्थर की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। नवपाषाण काल के पहले आदिमानव अस्थायी और असभ्य जीवन व्यतीत करता था। परन्तु नवपाषाण काल में कृषि, आग तथा पहिए की खोज से मानव जीवन में बदलाव आया। कालांतर में मानव सभ्यता क्रमिक रूप से शहरी सभ्यता के रूप में विकसित हुई। नगरीय जीवन का विकास हुआ। मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कृषि के साथ पशुपालन भी जुड़ा। कृषि के साथ पशुपालन के रूप में मिश्रित कृषि का विकास हुआ।

## उद्देश्य

**इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :**

- आदिमानव काल में खेती की शुरुआत का वर्णन कर सकेंगे;
- आदिमानव के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक मत और विश्वास की व्याख्या कर सकेंगे;
- सिन्धु घाटी सभ्यता के बारे में बता सकेंगे;
- नगरीय जीवन के विकास का वर्णन कर सकेंगे और
- खेती के विकास की व्याख्या कर सकेंगे;

## 1.1 आदिमानव का सामाजिक जीवन एवं कृषि

आदिमानव का विकास प्राइमेट्स से लाखों वर्ष पूर्व हुआ। प्राइमेट्स आरम्भिक स्तर के स्तनपायी थे। इनके शरीर पर बाल होते थे। ये बच्चे को दूध पिलाते थे। इनके दाँत चौड़े होते थे। प्राइमेट्स में होमोनॉयड तथा होमोनिड शामिल थे। होमोनॉयड से होमोनिड विकसित हुए। इसके बाद होमो हिबलिस हुए। इनमें बोलने की ग्रंथि थोड़ी विकसित हुई। इसने गुनगुनाना शुरू किया। पत्थर का औजार इसने सबसे पहले बनाया, लेकिन यह सीधे खड़ा नहीं होता था। इसके बाद होमोइरेक्ट्स आया। यह पैरों पर सीधे खड़ा हो सकता था। ये सभी समूह में रहते थे। भोजन, पानी, शिकार और आश्रय की खोज में घूमते रहते थे। काफी समय बाद होमो सैपियन्स के रूप में ज्ञानी मानव विकसित हुआ, जिसने पूर्व के मानव की अपेक्षा अधिक बुद्धि का उपयोग किया।

आदिमानव की सभ्यता के विकास की कहानी पाषाणकाल (500,000 ई.पू.–10000 ई.पू.) से शुरू होती है। पुरापाषाण काल और मध्य पाषाणकाल में आदिमानव गुफाओं में समूह में रहता था। ये समूह नदियों, झीलों के पास रहते थे। कंद-मूल, फल-फूल, बीज संग्रह करते थे। जंगली जानवरों का शिकार करते थे। मछली पकड़ने का काम करते थे। इन्हें मकान बनाना नहीं आता था। कृषि-कार्य भी नहीं जानते थे। नग्न अवस्था में घूमते रहते थे। पत्थर के भोथरे औजार इस्तेमाल करते थे। आदिमानव इस काल में असभ्य और घुमक्कड़ जीवन गुजारता था। भोथरे पत्थर के औजारों से शिकार करने में कठिनाई आती थी। इसलिए आदिमानव ने थोड़े चिकने और नुकीले पत्थर के औजार बनाए। आदि मानव मध्य पाषाणकाल के अंतिम चरण में पत्तों, वृक्षों की छाल और चमड़े से शरीर का कुछ हिस्सा ढकने लगा। ठंड एवं वर्षा से अपने आपको सुरक्षित किया। भारत में भीमबेटका की गुफाओं में आदिमानव के प्रमाण मिले हैं।

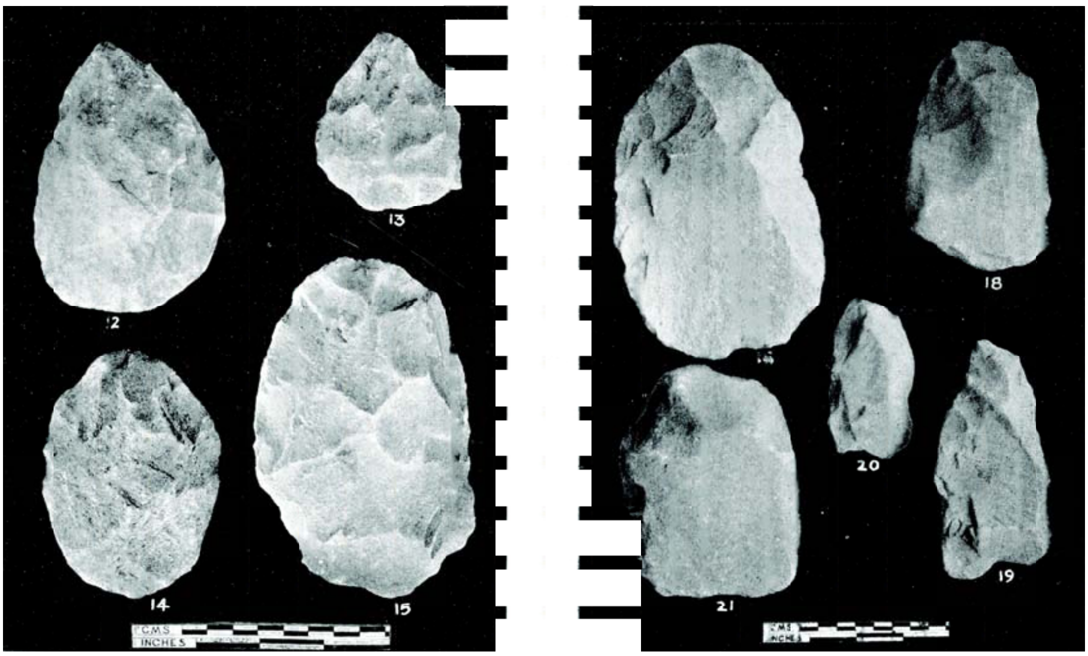


**चित्र 1.1 (क) : पाषाणकालीन उपकरण**

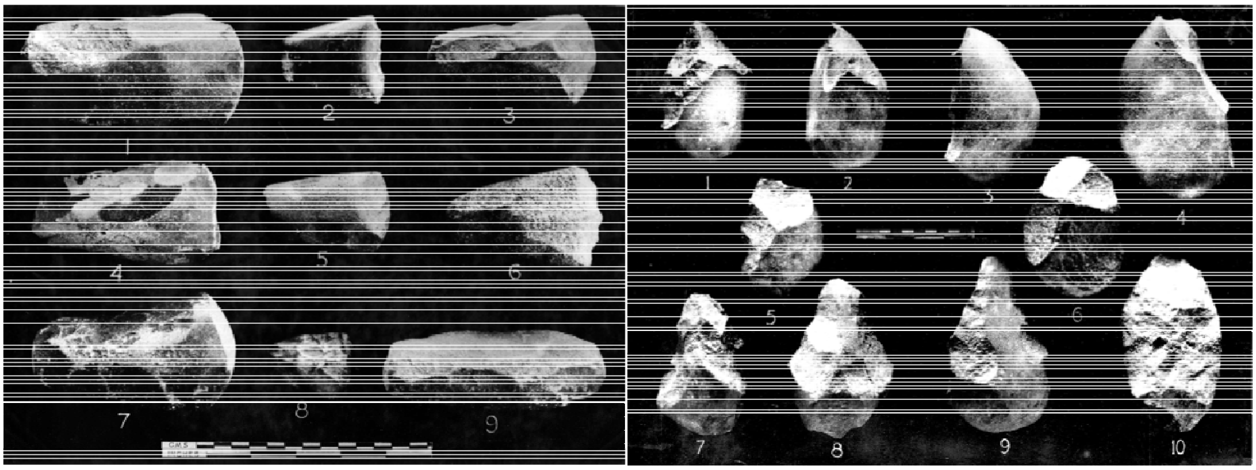

**चित्र 1.1 ( ख ) : पाषाणकालीन उपकरण**

परन्तु नवपाषाण काल (8000 ई.पू. - 4000 ई.पू.) में आग का आविष्कार हुआ। इससे आदिमानव के जीवन में बदलाव आया। आग से आदिमानव ने खाना पकाना सीखा। आग का इस्तेमाल ठंड से बचने के लिए किया। जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए भी आदिमानव ने आग का उपयोग किया, क्योंकि जंगली जानवर आग से डरकर भाग जाते थे।

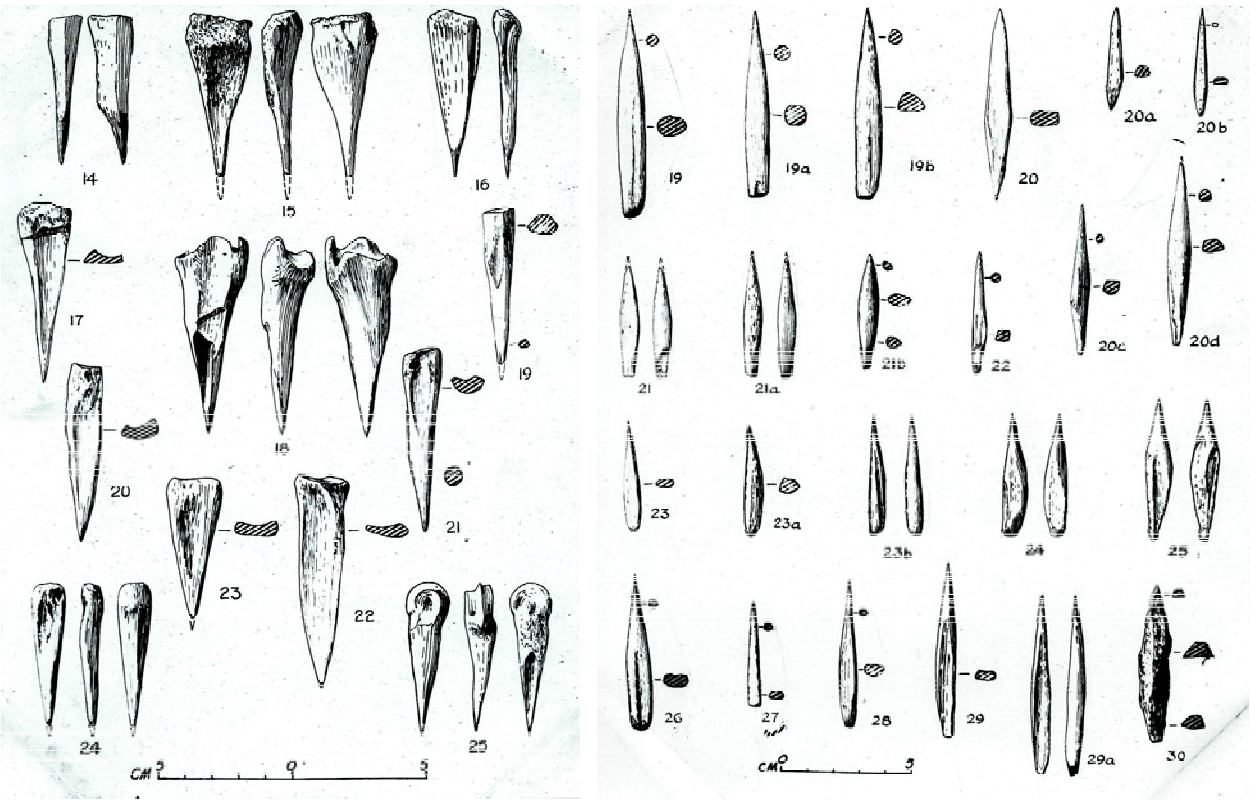

**चित्र 1.2 : नवपाषाणकालीन उपकरण**

संभवत: आदिमानव ने फल खाकर बीज फेंका होगा। उस बीज से पौधा उग आया। फिर उसकी देखभाल की गई। इस अनुभव से आदिमानव ने कृषि करना शुरू किया। कृषि-कार्य लकड़ी या किसी कठोर चीज़ से गीली जमीन खोदकर उसमें बीज डालकर करते थे। इस प्राचीन कृषि तकनीक को 'डिगिंग स्टिक' विधि कहते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में खेती का पहला प्रमाण मेहरगढ़ में मिलता है। आदिमानव ने कृषि के द्वारा स्थायी और सभ्य जीवन की शुरुआत की। वे चमड़े और छाल तथा पत्ते से शरीर ढकने लगे। स्थायी रूप से अपने खेत के पास मिट्टी और घास से घर बनाकर रहने लगे। इससे उनमें समाजीकरण अर्थात् सहयोग की भावना विकसित हुई।

पहिए ने गाड़ी निर्माण में मदद की, जिससे आवागमन आसान हो गया। बर्तन निर्माण का कार्य चाक के आविष्कार से हुआ। कृषि के साथ आदिमानव ने पशुओं को भी पालना शुरू किया। कुत्ता सबसे पहला पालतू पशु था। गेहूँ, जौ की खेती तथा भेड़ और बकरी के पालने का प्रमाण इजरायल के जेरिको नामक स्थान पर मिलता है।

कृषि-कार्य से आदिमानव का जीवन स्थायी हो गया। आदिमानव घर बनाकर एक स्थान पर रहने लगे। गाँव का विकास हुआ। आदिमानव के बीच परिवार और दूसरे सामाजिक संबंधों का विकास होने लगा। सामाजिक संबंधों का विकास कार्यों में सहयोग और सुरक्षा की जरूरत के कारण हुआ। नवपाषाण काल में पत्थर के तेज, नुकीले और धारदार औजार आदिमानव ने बनाए। अब आदिमानव का जीवन पहले से अधिक आसान हो गया।

## Q पाठगत प्रश्न 1.1

**1. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–**

(क) आदिमानव का विकास प्राइमेट्स से लाखों वर्ष पूर्व हुआ। ( )

(ख) होमो इरेक्ट्स पैरों पर सीधे खड़ा नहीं हो सकता था। ( )

(ग) होमो हिबलिस ने गुनगुनाना शुरू किया था। ( )

(घ) होमो सेपियन्स के रूप में ज्ञानी मानव का विकास हुआ। ( )

2. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्रथम प्रमाण कहाँ मिले हैं?

(क) रामगढ़ (ख) बाबूगढ़

(ग) मेहरगढ़ (घ) बान्धवगढ़

3. सबसे पहला पालतू पशु कौन बना?

(क) घोड़ा (ख) गाय

(ग) कुत्ता (घ) भैंस

## 1.2 आदिमानव के सामाजिक, आार्थिक, राजनीतिक, धार्मिक मत और विश्वास

पुरापाषाण काल में आदिमानव समूह में रहता था। वह अपने भोजन की तलाश और सुरक्षा के लिए एक-दूसरे को मदद करता था। यह समय समाजीकरण का प्रारम्भिक चरण रहा होगा।

नवपाषाण काल में कृषि के कारण आदिमानव एक स्थान पर बसने लगे। उन्होंने घर बनाया और स्थायी जीवन गुजारने लगे। स्थायी जीवन ने परिवार और समाज का निर्माण किया। इसके बाद गाँव अस्तित्त्व में आए।

आदिमानव की प्रारंभिक आर्थिक क्रियाएँ थीं - कंद-मूल, फल, बीज आदि का संग्रह करना, जंगली पशुओं का शिकार करना, मछली पकड़ना, अंडे व शहद आदि एकत्र करना। इसके लिए आदिमानव घुमन्तू जीवन गुजारता था। पुरापाषाण काल में आदिमानव खाने की चीजें जमा करने वाले और शिकारी थे।

नवपाषाण काल में कृषि और पहिए के आविष्कार से आदिमानव के आर्थिक जीवन में बदलाव आया। उसने कृषि-कार्य से अनाज का उत्पादन करना शुरू किया।

पहिए के आविष्कार से बर्तन-निर्माण शुरू हुआ। चाक से मिट्टी के बर्तन बनने लगे। पहिए से गाड़ी बनाई गई। पशुओं की सहायता से गाड़ी के द्वारा लोग एक जगह से दूसरी जगह जाने लगे। वस्तुओं को ढोने में सहायता मिली। व्यापार और आवागमन की प्रक्रिया तेज हो गई। दूध, मांस, खाल, ऊन आदि के लिए पशुओं का पालन शुरू हुआ। मानव ने बकरी, गाय, भैंस, भेड़ आदि पालना शुरू कर दिया।

नवपाषाण काल में आदिमानव ने खाद्य संग्रह, शिकार, मछली पकड़ने के साथ कृषि, बर्तन-उद्योग और व्यापारिक गतिविधियों को आर्थिक क्रिया के रूप में विकसित किया।

चित्र 1.3 : प्रागैतिहासिक चित्रकारी

आदिमानव के राजनीतिक जीवन का स्पष्ट प्रमाण नहीं है। संभवत: आरंभ में समूह का सबसे अधिक उम्र वाला व्यक्ति मुखिया होता हो। परिवार में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही होगी। समाज एवं गाँव के नियम आपसी समझौते के आधार बने होंगे, जिनका पालन आवश्यक था। कबीले का प्रधान इसके लिए उत्तरदायी रहा होगा। प्रत्येक कबीला अपनी परम्पराओं, रीति-रिवाज एवं कानून से बँधा था। कबीलाई शासन प्रणाली संभवत: आदिमानव के बीच रही होगी। ताकतवर या बुजुर्ग व्यक्ति नेता था, जो सबका ख्याल रखता था।

आदिमानव में प्राकृतिक घटनाओं और भावनात्मक संबंधों ने धार्मिक मत और विश्वास को जन्म दिया। बिजली और बादल से उन्हें डर लगता था। सूर्य की गर्मी परेशान करती थी। चाँद उन्हें सूर्य की भीषण गर्मी के बाद ठंडक का अनुभव कराता था। इसलिए आदिमानव सूर्य, बादल की पूजा करने लगे।

पूर्वजों की भी वे पूजा करते थे। मरे हुए लोगों को दफनाते समय औजार, भोजन, पानी आदि कब्र में रखते थे, ताकि अगले जन्म में मृतक उन चीजों का उपयोग कर सके। इस प्रकार पुनर्जन्म का विश्वास पैदा हुआ। आग से आदिमानव को लाभ हुआ, जिससे वे आग की पूजा करने लगे। पृथ्वी में बोए बीज से फसल पैदा होने के कारण पृथ्वी की पूजा आरंभ कर दी। जमीन को माँ के रूप में देखा। मनुष्य ने अनहोनी के भय से बलि देने की प्रथा शुरू की। सम्मान में गीत गाने, जादू-टोने की भी शुरुआत हुई। लोगों को भय से मुक्त करने के लिए वे पूजा-पाठ करने लगे।

## पाठगत प्रश्न 1.2

**1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–**

(क) ...................... जीवन ने परिवार और समाज का निर्माण किया। (घुमन्तू / स्थायी)

(ख) पुरा पाषाण काल में आदिमानव खाने की चीजें जमा करने वाला और ......................था। (व्यापारी / शिकारी)

(ग) पहिए के आविष्कार से ...................... निर्माण शुरू हुआ। (बर्तन / पत्थर)

**2. आदिमानव निम्न में से किसकी पूजा करते थे?**

(क) सूर्य

(ख) पृथ्वी

(ग) बादल

(घ) उपरोक्त सभी

## 1.3 सिन्धु घाटी सभ्यता

भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन नगरीय सभ्यता सिन्धु नदी के क्षेत्र में मिली है। इसलिए इसे सिन्धु घाटी सभ्यता कहा जाता है। हड़प्पा में सबसे पहले खुदाई होने के कारण सिन्धु घाटी सभ्यता का दूसरा नाम हड़प्पा सभ्यता भी है। 1921 ई. में पंजाब में हड़प्पा और 1922 ई. में सिन्ध में मोहनजोदड़ो में खुदाई की गई। सिन्धु घाटी सभ्यता 2700 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक यानी आज से चार-पाँच हजार वर्ष पहले रही होगी। सिन्धु घाटी सभ्यता के मुख्य शहर थे- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़, कालीबंगन और लोथल।

चित्र 1.4 : मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार

सामान्यत: भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता को सिन्धु घाटी की सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता कहा जाता है। परन्तु बाद में हरियाणा एवं राजस्थान क्षेत्र में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले हैं। इसका अर्थ है कि यह सभ्यता केवल सिन्धु घाटी में ही नहीं बल्कि भारत के अन्य स्थानों में भी थी। वैज्ञानिक शोधों से यह संकेत मिल रहे हैं कि वहां पर सरस्वती नदी बहती थी, जो बाद में लुप्त हो गई। इसलिए अब इस सभ्यता को कुछ भारतीय इतिहासकार सिन्धु-सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।

सबसे पहला कस्बा सरस्वती और सिन्धु नदी क्षेत्र में संभवत: 2500 ई.पू. में बना था। सिन्धु सभ्यता में ताँबे और काँसे का उपयोग होता था। चान्हूदड़ो में मनके बनाने का उद्योग था। लोथल में बन्दरगाह था, जहाँ से जहाज और नाव के द्वारा दूसरी जगह सामान भेजा जाता था। सिन्धु-घाटी सभ्यता के लोगों का व्यापारिक संबंध मेसोपोटामिया सभ्यता के लोगों से था।

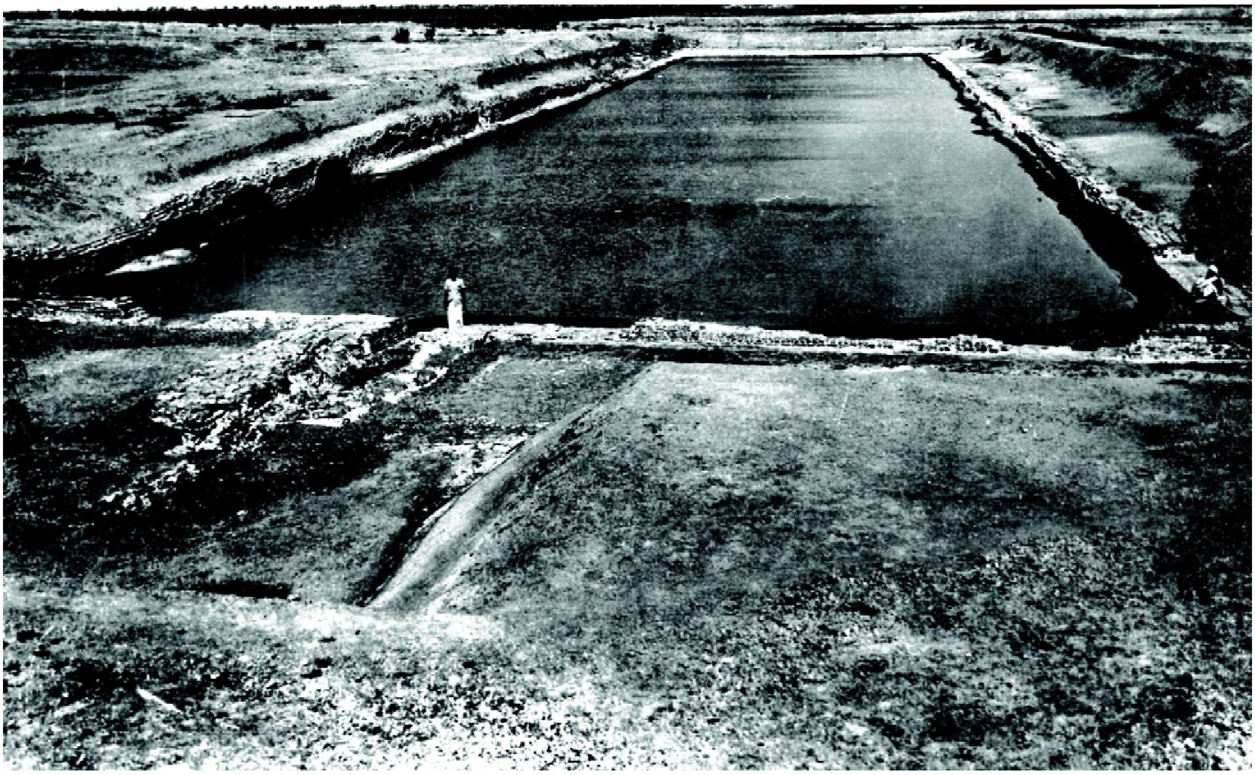

चित्र 1.5 : लोथल में मिले अवशेष

सिन्धु-घाटी सभ्यता के लोग पाषाण-युग से कांस्य युग में प्रवेश कर गए थे। उन्होंने पत्थर के साथ ताँबे के औजार, बर्तन व अन्य सामान भी बनाए। ताँबे के प्रयोग के कारण सिन्धु घाटी सभ्यता को काँस्ययुगीन सभ्यता भी कहते हैं। सिन्धु सभ्यता की लिपि भाव चित्रात्मक है, जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। इसलिए इसकी जानकारी खुदाई में प्राप्त अवशेषों एवं अनुमान पर आधारित है।

सिन्धु घाटी सभ्यता के मुख्य आर्थिक क्रियाकलाप थे- कृषि, पशुपालन, उद्योग और व्यापार। कृषि-कार्य वर्षा पर आधारित था। सिंचाई के लिए नदी के पानी और कुओं का उपयोग होता था। जौ, गेहूँ, चावल, दलहन, राई, सरसों आदि फसलों की खेती की जाती थी। लोथल और रंगपुर में चावल के प्रमाण मिले हैं। हल-बैल से खेतों की जुताई होती थी।

सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग मांसाहारी एवं शाकाहारी दोनों भोजन करते थे। दूध, घी, शहद, अंडे, मांस, मछली आदि भी उनके भोजन में शामिल था। सिन्धु घाटी सभ्यता के शासन में संभवतः व्यापारियों या पुरोहितों की भी भूमिका रही होगी। सिन्धु घाटी सभ्यता में ईंट पकाने के उद्योग, बर्तन उद्योग, मनका बनाने के उद्योग, कपड़े का उद्योग, रंग-रोगन, धातु गलाने का कार्य, आभूषण-निर्माण आदि महत्त्वपूर्ण उद्योग थे।

सिन्धु घाटी सभ्यता का अंत संभवतः पर्यावरण में बदलाव, बाढ़, भूकंप, महामारी या नदियों के मार्ग बदलने के कारण हुआ।

## पाठगत प्रश्न 1.3

1. **सही मिलान कीजिए–**

| | |
|---|---|
| (1) हड़प्पा | (क) सन् 1922 |
| (2) मोहनजोदड़ो | (ख) भाव चित्रात्मक |
| (3) लोथल | (ग) सन् 1921 |
| (4) सिन्धु सभ्यता की लिपि | (घ) बन्दरगाह |

2. सिन्धु घाटी सभ्यता में किस धातु का प्रयोग होता था?

........................................................................................................................................

3. सिन्धु घाटी सभ्यता के तीन महत्त्वपूर्ण शहरों के नाम लिखिए।

........................................................................................................................................

## 1.4 कृषि एवं नगरीय जीवन का विकास

जनसंख्या की बढ़ोत्तरी एवं खेती में अधिशेष उत्पादन ने नगरीय जीवन को जन्म दिया। अधिशेष उत्पादन का मतलब है, इतना उत्पादन हो जाना कि उपयोग के बाद कुछ हिस्सा बच भी जाए। श्रम विभाजन ने भी शहरी जीवन को बढ़ावा दिया। कृषि-कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्य, जैसे– मिट्टी के बर्तन बनाने का काम, कपड़ा बुनने का काम, बढ़ई का काम, चमड़े का काम, राजगीरी, गहने बनाने का काम आदि एक विशेष स्थान पर होने लगे। ऐसे स्थानों पर अनाज सहित अन्य वस्तुओं की खरीद-बिक्री की जाने लगी, जिससे नगरों की शुरुआत हुई।

**चित्र 1.6 : मोहनजोदड़ो से प्राप्त सिक्के**

प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता में नगरीय जीवन की झलक मिलती है। उस समय हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, चान्हूदड़ो, कालीबंगन आदि शहर थे। हड़प्पा में अनाज के गोदाम पाए गए हैं, जहाँ अनाज का अधिशेष उत्पादन जमा किया जाता था। बाढ़ या सूखे की स्थिति में तथा अनाज का कम उत्पादन होने पर इसका इस्तेमाल होता था।

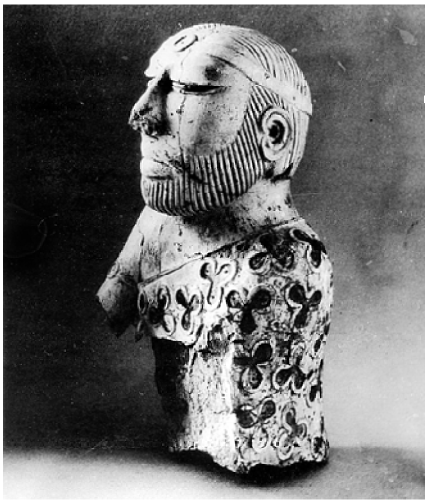

चित्र 1.7 मोहनजोदड़ो से प्राप्त पुजारी

चित्र 1.8 पशुपति

मोहनजोदड़ो में पकी ईंट के मकान तथा विशाल स्नानागार मिले हैं। सड़कें चौड़ी व समकोण पर विभाजित हैं। जल निकासी की व्यवस्था आज के शहरों जैसी थी।

चान्हूदड़ो में मनके बनाने का कारखाना था। लोथल बन्दरगाह था, जो व्यापारिक गतिविधियों के लिए उपयोग किया जाता था। लोथल बन्दरगाह से मेसोपोटामिया तथा अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार किया जाता था। कृषि, पशुपालन के साथ उद्योग और व्यापार भी विकसित थे। व्यापार को बढ़ावा देने के लिए सड़कें अच्छी बनाई जाती थीं। ईंट-निर्माण, वस्त्र, आभूषण, बर्तन, खिलौनों का निर्माण, मनका, औजारों का निर्माण, रंग-रोगन बनाना उस समय के मुख्य उद्योग थे।

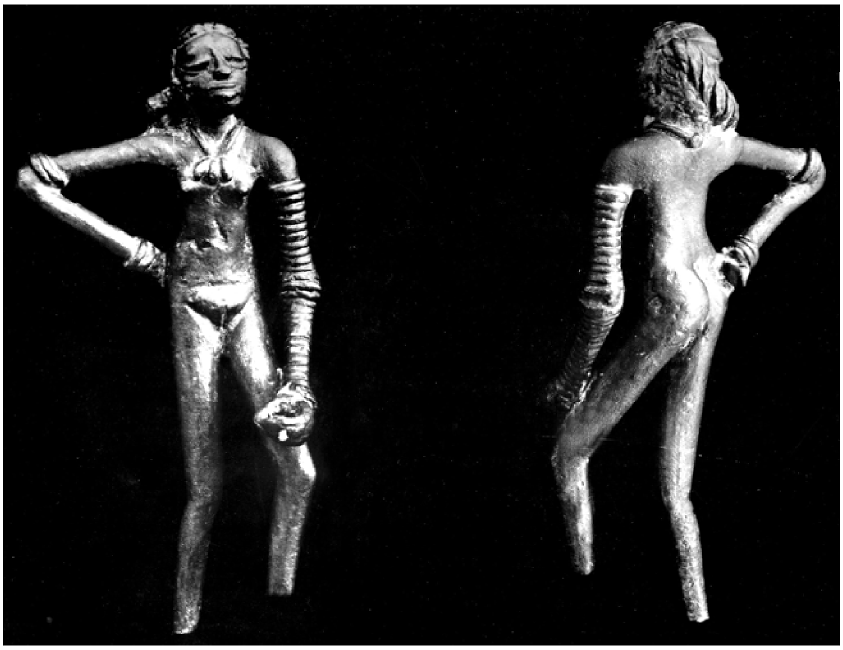

चित्र 1.9 नर्तकी - मोहनजोदड़ो

कृषक वर्ग शहरी लोगों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अधिशेष उत्पादन करते थे। कार्य के आधार पर सामाजिक विभाजन होने लगा। शहरों में जीवन आरामदायक हो गया। भवन, व्यापारिक केन्द्र, कारखाने आदि बनने लगे। नगरीय जीवन ने मानव जीवन को आसान बना दिया। विभिन्न तरह के रोजगार के अवसर पैदा हुए। नगरों में शिल्पकार, दस्तकार, व्यापारी, शासक वर्ग से संबंधित लोग रहते थे। शासक-वर्ग द्वारा लगान, कर या नज़राना लिया जाता था। नगरीय जीवन ने विलासिता को बढ़ावा दिया। नगरीय जीवन ने अमीर और गरीब के रूप में वर्ग-विभाजन किया।

चित्र 1.10 (क) : टेराकोटा मूर्तियाँ

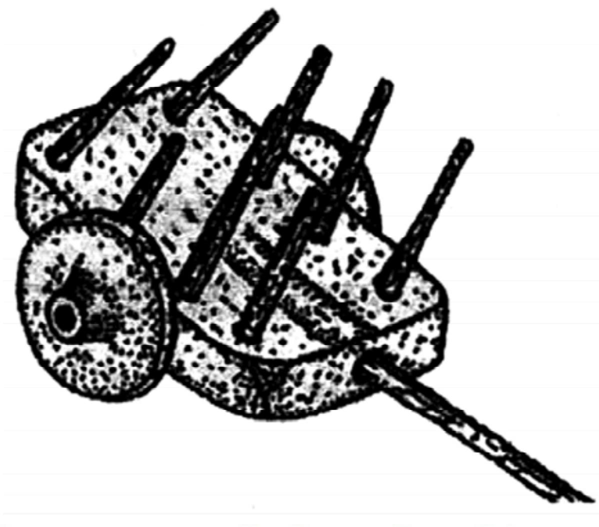

चित्र 1.10 (ख) : टेराकोटा गाड़ी-कालीबंगन

सिन्धु घाटी सभ्यता में नालियों की नियमित सफाई होती थी। घरों का निर्माण पक्की ईंट और कच्ची ईंट दोनों से होता था। घरों में कुआँ, आँगन, रसोईघर, शयनकक्ष और शौचालय की व्यवस्था होती थी। घर एक-मंजिला एवं बहु-मंजिला दोनों तरह के होते थे। नगरीय जीवन में शिल्प-विज्ञान एवं अनेक कलाएँ, जैसे- मूर्ति-कला, संगीत-कला, नृत्य-कला का विकास हुआ। नगरों में बड़े पैमाने पर वे लोग रहते थे, जो गैर कृषि-कार्य से जुड़े थे। नगरीय जीवन ने मानव-सभ्यता को एक नया रूप दिया।

चित्र 1.11 : टेराकोटा मूर्तियाँ

चित्र 1.12 : मातृदेवी की मूर्ति

नगरीय जीवन के लोग खाद्यान्न तथा अन्य उत्पाद के लिए ग्रामीण क्षेत्रों पर आश्रित थे। प्रारंभ में कृषि-कार्य में अनाज निकालकर शेष भाग का उपयोग नहीं किया जाता था। लेकिन मांस, दूध एवं ऊन उत्पादन की माँग को पूरा करने के लिए पशुपालन को कृषि से प्रत्यक्ष जोड़ दिया। चारे की खेती की जाने लगी। कृषि से प्राप्त अनाज के अतिरिक्त अन्य उपयोगी पदार्थों, जैसे– भूसा, छिलके, खली व अन्य पदार्थों का उपयोग पशुपालन में किया जाने लगा। खेती को व्यावसायिक रूप दिया गया। सिंचाई के साधन तैयार किए गए। खाद का प्रयोग किया जाने लगा। कृषि के विकास से पशुपालन के अनेक रूपों, जैसे– पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन आदि को बढ़ावा मिला। इस प्रकार, कृषि के विकास ने मिश्रित कृषि को जन्म दिया।

## पाठगत प्रश्न 1.4

**1. नगरीय जीवन की झलक किस प्राचीन भारतीय सभ्यता में मिलती है।**

(अ) यमुना-घाटी सभ्यता

(ब) सिन्धु-घाटी सभ्यता

(स) गंगा-घाटी सभ्यता

(द) इनमें से कोई नहीं

**2. लोथल बन्दरगाह क्यों प्रसिद्ध था?**

..........................................................................................................................

**3. सही वाक्य पर ✓ और गलत पर × का निशान लगाइए–**

(अ) कुत्ते के बाद आदिमानव भेड़, बकरी, गाय आदि पशु पालने लगा। ( )

(ब) नगरों के अधिकांश लोग कृषि-कार्य से जुड़े थे। ( )

(स) आदिमानव चारे की खेती भी करते थे। ( )

(द) आदिमानव सिंचाई के बारे में नहीं जानते थे। ( )

## आपने क्या सीखा

- आदिमानव का विकास प्राइमेट्स से हुआ, जिसमें होमोनॉयड और होमोनिड शामिल थे।
- होमो हिबलिस ने गुनगुनाना शुरू किया और पत्थर के औजार बनाए। ये सीधे खड़े नहीं हो सकते थे।

- होमो इरेक्ट्स सीधे पैरों पर खड़े होने लगे। इसके बाद होमो सेपियन्स के रूप में ज्ञानी मानव का विकास हुआ, जिसने बुद्धि का अधिक उपयोग किया।
- पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल तक क्रमिक रूप से मानव का विकास हुआ।
- पुरापाषाण काल में आदिमानव शिकारी, संग्राहक, घुमक्कड़ और असभ्य था। लेकिन नवपाषाण काल में आग, पहिए और खेती के आविष्कार से आदिमानव का जीवन स्थायी और आसान बन गया।
- आदिमानव पुरापाषाण काल में समूह में रहते थे। नवपाषाण काल में खेती के कारण समाज और गाँव का निर्माण हुआ।
- प्रारंभ में आदिमानव की मुख्य आर्थिक क्रियाएँ थीं- शिकार करना, मछली पकड़ना, कंद-मूल और फल संग्रह करना। बाद में नवपाषाण काल में खेती और पशुपालन आदि करने लगे। आदिमानव के राजनीतिक जीवन के स्पष्ट प्रमाण नहीं हैं। पर संभावना है कि कबीले के रूप में सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा शासित होते थे। परम्पराओं, रीजि-रिवाजों और कानून से बंधे थे।
- आदिमानव में प्राकृतिक घटनाओं और भावनात्मक संबंधों ने धार्मिक मत और विश्वास को जन्म दिया।
- भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता सिन्धु-घाटी सभ्यता का विकास 2500 ई.पू. में सिन्धु नदी क्षेत्र में हुआ। इसका संबंध मेसोपोटामिया से था। पर्यावरण में बदलाव और प्राकृतिक आपदाओं के कारण संभवतः सिन्धु-घाटी सभ्यता नष्ट हुई।
- नगरीय जीवन का विकास जनसंख्या में बढ़ोत्तरी, अधिशेष कृषि उत्पादन और श्रम विभाजन के कारण हुआ। नगरों का निर्माण योजनाबद्ध होता था। नगरों में गैर कृषि-कार्य से जुड़े लोग बड़े पैमाने पर थे।
- मानव ने कृषि के साथ पशुपालन को जोड़कर मिश्रित कृषि को जन्म दिया।

## पाठांत प्रश्न

**1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए–**

(क) बर्तन-निर्माण का कार्य ................................ के आविष्कार से शुरू हुआ।

(चाक / खेती)

(ख) ................................ की गुफा में आदिमानव के प्रमाण मिले हैं।

(भीमबेटका / बाराबर)

(ग) सिन्धु घाटी में मोहनजोदड़ो की खुदाई .............................. ई. में की गई।

(1921 / 1922)

**2. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का निशान लगाइए–**

(क) सिन्ध-सभ्यता लौहयुगीन सभ्यता थी। ( )

(ख) सिन्ध-सभ्यता की लिपि भाव चित्रात्मक थी। ( )

(ग) लोथल और रंगपुर में चावल के अवशेष मिले हैं। ( )

**3. सिन्धु-सभ्यता के नगरों की कौन सी विशेषता थी?**

(क) योजनाबद्ध नगर निर्माण

(ख) जल-निकासी

(ग) चौड़ी सड़कें

(घ) उपरोक्त सभी

4. प्राचीन कृषि करने की तकनीक को क्या कहा जाता था?

..........................................................................................................................................

5. नगरों के लोग खाद्यान्न और अन्य उत्पाद के लिए किस पर निर्भर थे?

..........................................................................................................................................

6. मनुष्य ने पशुपालन किन वस्तुओं की प्राप्ति के लिए किया?

..........................................................................................................................................

7. सिन्धु घाटी सभ्यता के किन्हीं चार उद्योगों के नाम लिखिए।

..........................................................................................................................................

8. नगरों में रहने वाले लोग कौन थे?

..........................................................................................................................................

## उत्तरमाला

### पाठगत प्रश्न

**1.1** 1. (क) ✓ (ख) ✗

(ग) ✓ (घ) ✓

2. मेहरगढ़।

3. कुत्ता।

**1.2** 1. (क) स्थायी। (ख) शिकारी।

(ग) बर्तन।

2. (घ) उपरोक्त सभी

**1.3** 1. सन् 1921 2. सन् 1922

3. बन्दरगाह 4. भाव चित्रात्मक

2. ताँबे और काँसे का

3. हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगन, रोपड़ (कोई तीन)

**1.4** 1. (ब) सिन्धु घाटी सभ्यता में।

2. 'लोथल' बन्दरगाह व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

3. (अ) ✓, (ब) X, (स) ✓, (द) ✗

## पाठांत प्रश्न

1. (क) चाक (ख) भीमबेटका (ग) सन् 1922

2. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓

3. (घ) उपरोक्त सभी

4. डिगिंग स्टिक विधि।

5. ग्रामीण क्षेत्र के लोगों पर।

6. दूध, माँस, ऊन, चमड़े, अण्डे आदि के लिए।

7. ईंट उद्योग, बर्तन, आभूषण, मनका, वस्त्र उद्योग (कोई चार)।

8. शासक, शिल्पकार, हस्तकार, व्यापारी वर्ग के लोग।

# 2

# वैदिक सभ्यता

विश्व में अनेक प्राचीन मानव सभ्यताओं के प्रमाण मिले हैं, जैसे– सिन्धु घाटी सभ्यता, मेसोपोटामिया सभ्यता आदि। भारत में प्राचीन सभ्यता सिन्धु घाटी सभ्यता थी। इसका विकास सिन्धु नदी के आस-पास हुआ था। इसके साथ ही एक और प्राचीन सभ्यता की शुरुआत हुई। यह सभ्यता आर्यों से शुरू हुई थी। आर्यों का जीवन सिन्धु सभ्यता के लोगों से थोड़ा अलग था। आर्य लोग पशुपालन एवं कृषि पर विशेष ध्यान देते थे। उनका जीवन ग्रामीण परिवेश का था। आर्यों की सभ्यता को ही वैदिक सभ्यता कहा जाता है। वैदिक सभ्यता से आर्यों के जीवन, उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

## उद्देश्य

**इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :**

- आर्यों और उनके ग्रंथों का वर्णन कर सकेंगे;
- वैदिक युग की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की व्याख्या कर सकेंगे और
- रामायण और महाभारतकालीन जनजीवन की व्याख्या कर सकेंगे।

## 2.1 आर्य और उनके प्रमुख ग्रंथ

आर्यों ने एक नई सभ्यता की शुरुआत की। आर्यों की सभ्यता को ही वैदिक सभ्यता कहते हैं। आर्यों की सभ्यता संभवतः सिन्धु सभ्यता के बाद आई। आर्यों ने अपना विस्तार गंगा- यमुना दोआब तक किया।

यह माना जाता है कि वैदिक सभ्यता सिन्धु घाटी के बाद की है तथा आर्य लोग बाहर से भारत में आए थे, लेकिन इसके कोई ठोस सबूत नहीं मिले हैं। इसलिए यह भी कहा जा सकता है कि आर्य लोग बाहर से नहीं आए अपितु वे भारत में ही थे।

वैदिक सभ्यता को दो भागों में बाँटा गया है– पूर्व वैदिक काल (ऋग्वैदिक काल) और उत्तर वैदिक काल।

आर्य या वैदिक लोगों के जीवन की जानकारी उनके प्रमुख ग्रंथ वेदों से मिलती है। वेदों की भाषा वैदिक संस्कृत है। वेदों की कुल संख्या चार है– *ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।* प्रारंभ में तीन वेद थे, चौथा बाद में बना है। सबसे पहला वेद *ऋग्वेद* है। *ऋग्वेद* से पूर्व वैदिक काल की जानकारी मिलती है। ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं, जैसे– अग्नि, वरुण, इन्द्र, सूर्य आदि की स्तुति है। *ऋग्वेद* के सूक्तों की रचना ऋषियों द्वारा की गई है।

*सामवेद* संगीत से सम्बन्धित है। इसका गायन विशेष अवसरों पर उद्गाता (गाने वाला पुरोहित) करता था। *यजुर्वेद* और *अथर्ववेद* में चिकित्सा, यज्ञ-विधि, जादू-टोना आदि शामिल हैं।

वेदों के कुछ मंत्रों की रचना विदुषी महिलाओं, जैसे– गार्गी, मैत्रेयी, विश्ववारा, अपाला, घोषा आदि द्वारा की गई है।

## पाठगत प्रश्न 2.1

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-**

   (क) आर्य लोगों की सभ्यता को ............................ कहते हैं। (सिन्धु सभ्यता / वैदिक सभ्यता)

   (ख) वेदों की कुल संख्या ............................ है। (तीन / चार)

   (ग) ............................ में अग्नि, वरुण, इन्द्र आदि की स्तुति है। (सामवेद / ऋग्वेद)

2. वेदों की भाषा क्या है?

   ..........................................................................................................

3. आर्यों का सबसे पहला ग्रंथ कौन-सा है?

   ..........................................................................................................

## 2.2 वैदिक युग की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था

वैदिक युग में समाज की इकाइयाँ, परिवार और कुल जैसी थीं। वैदिक युग का समाज वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था। इसकी जानकारी *पुरुष सूक्त* से होती है। समाज चार वर्णों में बँटा था– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य

और शूद्र। ऋग्वैदिक काल में वर्ण–व्यवस्था कठोर नहीं थी। यह कर्म पर आधारित थी परन्तु उत्तरवैदिक काल में वर्ण–व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई। इसके कारण वर्ण–व्यवस्था कठोर हो गई और आगे चलकर इसने जाति प्रथा का रूप लिया।

समाज के चारों वर्णों के कार्य अलग–अलग थे। उनको उनके कार्यों के कारण समाज में स्थान व सम्मान प्राप्त था। ब्राह्मणों का समाज में सबसे ऊँचा स्थान था। ब्राह्मण शिक्षा लेते थे तथा दूसरों को शिक्षा देते थे। इसके अतिरिक्त यज्ञ कराते थे, समाज को दिशा–निर्देश देते थे, राजा को पुरोहित या मंत्री के रूप में सलाह देते थे। क्षत्रिय लोग सुरक्षा एवं शासन का कार्य देखते थे, युद्ध करते थे और शस्त्र विद्या एवं शासन का कार्य देखते थे। वैश्य लोग, कृषि, पशुपालन और व्यापार करते थे। वे लोगों की जरूरतों को पूरा करते थे। शूद्र लोग विभिन्न प्रकार की सेवाएँ देते थे। वे कृषि, पशुपालन एवं लोगों के दूसरे कार्यों में सहयोग करते थे।

शूद्रों की सामाजिक स्थिति आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर की कमी के कारण लगातार खराब होती गई। उत्तरवैदिक काल में शूद्रों की स्थिति में ज्यादा गिरावट आई। छुआछूत ने शूद्रों की सामाजिक स्थिति को उत्तर वैदिक सभ्यता में कमजोर किया।

महिलाओं की स्थिति ऋग्वैदिक काल में अच्छी थी। उन्हें शिक्षा मिलती थी, संपत्ति में अधिकार था, वे अपनी इच्छा से विवाह कर सकती थीं। पर्दा प्रथा का अभाव था। परिवार का वयोवृद्ध पुरुष मुखिया होता था। पितृसत्तात्मक समाज था। उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट आई।

आर्य लोग मांसाहारी और शाकाहारी दोनों भोजन करते थे परन्तु शाकाहारी भोजन प्रचलित था। सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र पहनते थे। रथदौड़, चौपड़ का खेल इनके मनोरंजन के साधन थे।

आर्यों के घर आयताकार व गोलाकार होते थे, जो लकड़ी, घास और मिट्टी के लेप से बने होते थे। वैदिक लोगों का आर्थिक जीवन पशुपालन और कृषि पर निर्भर था। आर्य गाय, घोड़ा, कुत्ता, भेड़, भैंस, बकरी आदि पालते थे। पशुपालन दूध, मांस और ऊन प्राप्ति के लिए किया जाता था। घोड़े का प्रयोग वे युद्ध के समय और रथों में करते थे।

आर्य जौ, गेहूँ, चावल, दाल, बाजरा, मटर, ईख और तिल आदि की खेती करते थे। वे खेती–योग्य भूमि, चारागाह और पानी की तलाश में इधर–उधर घूमते थे। लोहे के औजारों से जंगलों की सफाई करते थे। खेती–योग्य भूमि बनाकर फसल उगाते थे। लोहे के हथियारों से शत्रुओं को पराजित करके अपने क्षेत्र का विस्तार करते थे। मिट्टी के बर्तनों का निर्माण किया जाता था। समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिल्पकार होते थे। अन्न का भंडारण मिट्टी के बर्तन या टोकरी आदि में किया जाता था।

प्रारंभ में कबीले या जन के मुखिया को 'राजन' कहा जाता था। इनके पास न तो बड़ी राजधानी होती थी और न ही स्थायी सेना। प्रारंभ में पिता के मरने पर पुत्र के शासक बनने की प्रथा नहीं थी। चुनाव द्वारा राजा बनते थे। बाद में जनपद और महाजनपद बनने से राजत्व बदल गया। राजा राजधानी बनाकर स्थायी सेना के साथ रहने लगा। राजधानी से ही शासन का काम करता था। लोगों को सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था उपलब्ध कराता था। बदले में जनता से कर वसूलता था। कर का कुछ भाग प्रशासनिक कार्यों एवं सेना पर खर्च करता

था। शेष कर को लोगों की भलाई एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च करता था। राज्य की आय का स्रोतभूमि कर था।

राजा सर्वोच्च सेनापति, न्यायाधीश और राज्य का प्रमुख होता था। उसकी सहायता के लिए पुरोहित या मंत्री होते थे। ऋग्वैदिक काल में राजा का पद वंशानुगत नहीं था। उत्तरवैदिक काल में राजा का पद वंशानुगत हो गया। राजा सत्ता के लिए राजसूय और अश्वमेध यज्ञ करते थे। राजा मुख्य रूप से क्षत्रिय वर्ग से बनते थे। राजा से लोग भलाई और लोक कल्याण की आशा करते थे। आर्यों ने ऊपरी गंगा के मैदानी भाग में काशी, कौसल और विदेह तीन राज्यों की स्थापना की।

## पाठगत प्रश्न 2.2

1. **सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर × का निशान लगाइए-**

   (क) वैदिक युग का समाज वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था। ( )

   (ख) वैदिक समाज तीन वर्णों में विभाजित था। ( )

   (ग) समाज में शूद्रों का स्थान सबसे नीचे था। ( )

   (घ) वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था। ( )

2. वैदिक काल में समाज में कौन-कौन से वर्ण थे?

   ..........................................................................................................

3. वैदिक लोगों के आर्थिक जीवन में किसका योगदान था?

   ..........................................................................................................

## 2.3 रामायण एवं महाभारतकालीन जनजीवन

रामायण और महाभारत की कहानियों से उस समय के जन-जीवन की जानकारी मिलती है। रामायण में अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम और उनके जीवन की जानकारी है। सीताहरण के बाद राम-रावण युद्ध का भी वर्णन है। रामायणकालीन समाज मान-मर्यादापूर्ण था। लोग धार्मिक और सामाजिक नियमों का पालन करते थे। समाज वर्णों एवं जातियों में बँटा था।

शासन में राजा का पद वंशानुगत था। राजा का ज्येष्ठ पुत्र ही राजा बनता था। राजा द्वारा यज्ञ किए जाते थे, जैसे– राजसूय और अश्वमेध यज्ञ। ऐसे यज्ञों में राज परिवार के लोग मुख्य रूप से हिस्सा लेते थे। सारथि, पुरोहित, सेना प्रमुख, संदेशवाहक, रत्निन आदि भी शामिल होते थे। वैश्यों को उपहार देना पड़ता था। पड़ोसी राजाओं को बुलाया जाता था। शूद्रों से भी काम लिया जाता था।

चित्र 2.1 : रामायण की कथा

रामायण ग्रंथ सूर्यवंशी क्षत्रिय वंश परम्परा की जानकारी देता है। यह महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में लिखा गया है। भारत के अन्य क्षेत्रों में भी इसे अलग-अलग लेखकों ने लिखा है, जैसे– *कंबन रामायण*। *रामायण* में कोसल, विदेह के साथ लंका का भी उल्लेख है।

रामायण काल में यज्ञ की सुरक्षा राजा द्वारा की जाती थी। विश्वामित्र राक्षसों के विघ्न को समाप्त करने के लिए राजा दशरथ से उनके पुत्र राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले गए। पिता के आदेश का पालन पुत्र के लिए अनिवार्य था।

विवाह की स्वयंवर प्रणाली मौजूद थी। इसमें राजाओं को बुलाया जाता था। राजकुमारी अपनी इच्छा से 'वर' पसंद करती थी। राजा विदेह ने स्वयंवर द्वारा अपनी पुत्री सीता का विवाह अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम से करवाया।

पिता के आदेश पर राम ने अपनी पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष के लिए वन की ओर प्रस्थान किया। कैकेयी के पुत्र भरत ने राम से वापस लौटने की अपील की, परन्तु राम ने मर्यादा का पालन किया। वनवास के दौरान ही सीता का हरण लंका के राजा रावण ने किया। राम ने हनुमान, सुग्रीव, जामवन्त एवं लंका के राजा रावण के भाई विभीषण की सहायता से रावण को पराजित किया। इसके बाद राम, सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे। अयोध्या में सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी क्योंकि एक व्यक्ति ने सीता की पवित्रता पर उँगली उठाई थी।

राजा राम ने सीता को गर्भवती होते हुए भी त्याग दिया ताकि समाज में मान-मर्यादा कायम रहे। छल और प्रपंच का भी सहारा लिया जाता था, जैसे– मारीच द्वारा स्वर्ण मृग का रूप धारण किया गया। रावण ने धोखे से सीता का हरण किया। रामायण और रामचरितमानस में अन्तर है। *रामायण* वाल्मीकि ने संस्कृत में लिखा है, जबकि *रामचरितमानस* तुलसीदास ने अवधी में लिखा है।

चित्र 2.2 : महाभारत की कथा

महाभारत एक अन्य महाकाव्य है। इसमें चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा की कहानी है। *महाभारत* में उस समय की सामाजिक घटनाओं का वर्णन है। इसमें एक परिवार के चचेरे भाइयों के बीच युद्ध का वर्णन है। पांडु पुत्र पांडव और धृतराष्ट्र पुत्र कौरवों के बीच भूमि, सत्ता और शक्ति के लिए युद्ध हुआ। राजा का ज्येष्ठ (बड़ा) पुत्र ही उत्तराधिकारी होता था। महाभारत में उत्तराधिकारी के नियम व मापदंड दर्शाए गए हैं।

हस्तिनापुर की गद्दी के लिए दृष्टिहीन धृतराष्ट्र को अयोग्य माना गया। धृतराष्ट्र की जगह उनके छोटे भाई पांडु को राजगद्दी दी गई। पांडु की अचानक मृत्यु के बाद पांडु पुत्र युधिष्ठिर और धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन के बीच उत्तराधिकार के लिए संघर्ष हुआ। सभासदों और जनता की सहानुभूति युधिष्ठिर के पक्ष में थी। इसके कारण दुर्योधन पाण्डु के पुत्रों से ईर्ष्या करता था। इसी ईर्ष्या के कारण कुरुक्षेत्र में पांडवों और कौरवों में युद्ध हुआ। अर्जुन ने युद्ध में मोहग्रस्त होकर युद्ध करने से इनकार किया, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें गीता का उपदेश देकर मोह भंग किया। महाभारत की लड़ाई में छल-प्रपंच, धोखा एवं अनैतिकता का भी सहारा लिया गया, जैसे– द्रौपदी का वस्त्रहरण, बालक अभिमन्यु की हत्या, अश्वत्थामा वध।

महाभारत के समाज में गोत्र प्रणाली थी। एक ही गोत्र में विवाह नहीं होता था। महिलाएँ विवाह के बाद अपने पति के गोत्र में शामिल होती थीं। महाभारतकाल में भी समाज में चार वर्ण थे– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इन सबके कार्य अलग-अलग थे। वर्ण-व्यवस्था कठोर थी। महाभारत में कुरु, पांचाल, गांधार सहित अन्य क्षेत्रों का उल्लेख है।

## पाठगत प्रश्न 2.3

**1. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-**

(क) रामायण और महाभारत दो महत्त्वपूर्ण ...............................हैं। (महाकाव्य / उपन्यास)

(ख) श्रीकृष्ण ने .............................. को गीता का उपदेश दिया। (दुर्योधन / अर्जुन)

(ग) अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र .................... थे। (राम / श्याम)

(घ) रामायण काल में विवाह की ................ प्रणाली थी। (स्वयंवर / अन्तःगोत्रीय विवाह)

(च) राजा का .................. पुत्र शासक बनता था। (ज्येष्ठ / कनिष्क)

2. राम कितने वर्ष के लिए वनवास गए थे?

..........................................................................................................................

3. महाभारत का युद्ध किनके बीच हुआ?

..........................................................................................................................

## आपने क्या सीखा

- आर्यों का आर्थिक जीवन पशुपालन और कृषि पर निर्भर था।
- आर्यों के प्रमुख ग्रंथ वेद थे, जिनकी संख्या चार है– *ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद*। इनमें *ऋग्वेद* सबसे प्राचीन है।
- आर्यों की सभ्यता ही वैदिक सभ्यता कहलाई, जिसका प्रसार गंगा के ऊपरी इलाके में हुआ।
- वैदिक सभ्यता दो भाग में बँटी थी– (1) पूर्व वैदिक काल (ऋग्वैदिक), (2) उत्तर वैदिक काल।
- वैदिक सभ्यता ने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था को प्रभावित किया।
- समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था थी। पूरा समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों में बँटा था।
- *महाभारत* और *रामायण* महाकाव्य उस समय के सामाजिक इतिहास की जानकारी देते हैं।

## पाठांत प्रश्न

1. वैदिक सभ्यता को कितने भागों में बाँटा गया है?

..........................................................................................................................

2. *ऋग्वेद* में किन देवताओं का उल्लेख है?

..........................................................................................................................

3. ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति कैसी थी?

..........................................................................................................................

4. वैदिक काल में कौन-सी फसलें उगाई जाती थीं?

.......................................................................................................................

5. प्राचीन भारतीय सामाजिक इतिहास की जानकारी किन ग्रंथों से मिलती है?

.......................................................................................................................

## आइए, करके देखें

1. वर्तमान समय में किए जाने वाले यज्ञ की प्रक्रिया एवं उनसे जुड़ी जानकारी इकट्ठा कीजिए। इसकी तुलना वैदिक सभ्यता के यज्ञ से कीजिए।
2. *रामायण* और *महाभारत* का अध्ययन कीजिए। उस समय के जीवन और आज के जीवन के फर्क को समझिए और आपस में चर्चा कीजिए।

## उत्तरमाला

### पाठगत प्रश्न

**2.1** 1. (क) वैदिक सभ्यता (ख) चार (ग) ऋग्वेद

2. वैदिक संस्कृत

3. ऋग्वेद

**2.2** 1. (क) ✓ (ख) ✗

(ग) ✓ (घ) ✓

2. चार वर्ण थे– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

3. पशुपालन और कृषि का।

**2.3** 1. (क) महाकाव्य (ख) अर्जुन (ग) राम

(घ) स्वयंवर (च) ज्येष्ठ

2. 14 वर्ष के लिए।

3. कौरवों और पांडवों के बीच।

### पाठांत प्रश्न

1. दो भागों में– पूर्व वैदिक और उत्तर वैदिक सभ्यता।
2. इन्द्र, सूर्य, वरुण आदि।
3. ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की दशा अच्छी थी। शिक्षा, संपत्ति का अधिकार था। पर्दा प्रथा नहीं थी।
4. जौ, गेहूँ, चावल, दाल, ईख, मटर, बाजरा, तिल आदि।
5. *रामायण* और *महाभारत*।

# 3

# वैदिक सभ्यता के बाद का जीवन

वैदिक सभ्यता के बाद छठी सदी ईसा पूर्व उत्तर-पूर्व भारत में बड़े और शक्तिशाली आरंभिक राज्य उभरे। इनकी संख्या 16 थी। ये आरंभिक राज्य ही सोलह महाजनपद कहलाए। इस काल में लोहे के उपकरणों और औजारों के कारण कृषि का विस्तार हुआ। व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा मिला। शहरीकरण की शुरुआत हुई। मगध की स्थापना हर्यक वंश के राजा बिंबसार के द्वारा की गई परन्तु नन्द वंश के शासकों ने मगध को शक्तिशाली राज्य बनाया। घनानन्द के अत्याचार और अन्याय के खिलाफ चन्द्रगुप्त मौर्य ने संघर्ष किया और चाणक्य की सहायता से मगध में मौर्य वंश की स्थापना की। इस अध्याय में हम वैदिक सभ्यता के बाद नन्द वंश और मौर्य वंश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का अध्ययन करेंगे।

## उद्देश्य

**इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :**

- जनपद, महाजनपद के विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- नन्द वंश के समय सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था की व्याख्या कर सकेंगे;
- मौर्य साम्राज्य के प्रमुख शासकों के बारे में बता सकेंगे;
- अशोक के महान सम्राट होने के कारणों की व्याख्या कर सकेंगे और
- मौर्यों के शासन में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्था का वर्णन कर सकेंगे।

## 3.1 जनपद, महाजनपद एवं नन्द वंश – सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था

जनपद का अर्थ है– वह भूमि, जहाँ कबीले के लोगों (जन) ने पाँव (पद) रखे। जनपद आरंभिक शासन की इकाई थी। यह किलाबन्द शहर था। जनपद के अनेक प्रमाण मिले हैं। चित्रित धूसर और लाल रंग के मिट्टी के बर्तन खुदाई में प्राप्त हुए हैं। इन बर्तनों पर रेखाएँ एवं ज्यामितीय आकृतियाँ हैं। चित्रित धूसर बर्तन दिल्ली के भोरगढ़, मंडोली, तिलपत, पुराना किला में खुदाई में मिले हैं। मेरठ के निकट हस्तिनापुर, एटा के निकट अतरंजीखेड़ा में भी ऐसे बर्तन प्राप्त हुए हैं।

चित्र 3.1 : खुदाई में मिले बर्तन

2500 ई.पू. कुछ जनपदों ने लोहे के उपकरणों और औजारों से जंगलों को साफ किया। इससे कृषि-क्षेत्र का विस्तार हुआ। कृषि-क्षेत्र में फसल का अधिक उत्पादन होने लगा। उन्होंने लोहे के हथियार बनाए। इस प्रकार जनपदों ने अपनी शक्ति और क्षेत्र का विस्तार कर बड़े राज्यों का निर्माण किया।

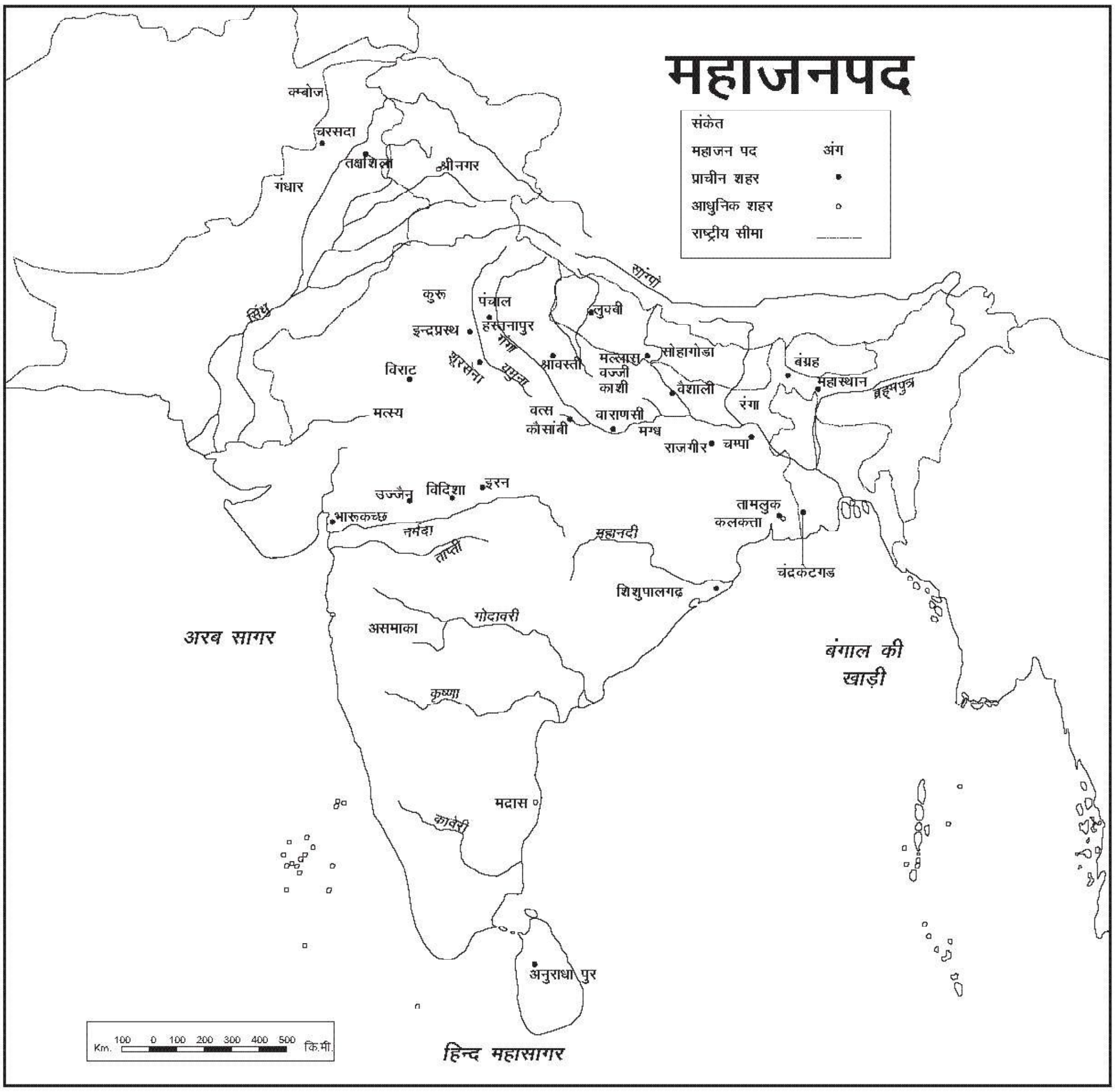


**चित्र 3.2 : महाजनपद**

इन्हीं बड़े और शक्तिशाली जनपदों को महाजनपद कहा गया है। महाजनपदों की संख्या 16 थी। इन्हें सोलह (षोडश) महाजनपद कहा जाता था। सोलह महाजनपद थे– अंग, मगध, वज्जी, काशी, कोसल, मल्ल, कुरु, पाँचाल, वत्स, अवंती, कंबोज, गांधार, अस्मक, चेदि, मत्स्य और शूरसेन। इन महाजनपदों में मगध, कोसल और अवंती सबसे शक्तिशाली महाजनपद थे। बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' से सोलह महाजनपदों की जानकारी मिलती है।

महाजनपद की एक राजधानी होती थी। यहीं से राजा शासन करता था। राजा के पास अपनी सेना होती थी। सुरक्षा के लिए किलेबन्द शहर और दुर्ग बनाए जाते थे। प्रशासनिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए राजा प्रजा से कर वसूलता था। महाजनपद काल में लोहे और सिक्कों (मुद्रा के रूप में) का प्रयोग हुआ। यह काल राज व्यवस्था के विकास और धार्मिक बदलाव का युग था।

मगध एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा। मगध के शक्तिशाली होने के अनेक कारण थे। मगध के बड़े क्षेत्र में जंगल था। जंगलों से सेना के लिए हाथी मिल जाते थे।

मगध क्षेत्र में लोहे की खान थी, जिससे लोहा प्राप्त होता था। लोहे से कृषि–उपकरण और हथियार बनाए गए। कृषि–क्षेत्र का विस्तार होने लगा। फसल–उत्पादन से आर्थिक खुशहाली बढ़ी। मगध क्षेत्र गंगा और सोन नदियों के निकट था। इन नदियों से सिंचाई के लिए जल मिलता था। बाढ़ द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी उपजाऊपन बढ़ाती थी। नदियाँ सुगम और सस्ते यातायात का मार्ग भी उपलब्ध कराती थीं।

मगध की राजधानी गिरिब्रज (राजगीर) पहाड़ियों से घिरी थी। मगध का संस्थापक हर्यक वंश का शासक बिम्बिसार था। उसके उत्तराधिकारी अजातशत्रु और उदयन रहे। उन्होंने मगध को शक्तिशाली बनाया। बाद में शिशुनाग और नन्द वंश के शासकों ने भी इसे समृद्ध बनाया।

नन्द वंश की स्थापना महापद्मनन्द ने की थी महापद्मनन्द ने 364 ई.पू. से 345 ई.पू. तक शासन किया। महापद्मनन्द की सेना काफी बड़ी और शक्तिशाली थी। उसने कलिंग को अपने साम्राज्य में मिलाया।

नन्द वंश के समय समाज वर्ण–व्यवस्था पर आधारित था। वर्ण–व्यवस्था के साथ जाति प्रथा का प्रचलन था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में विभाजन था। शूद्रों और महिलाओं की सामाजिक दशा खराब थी। अनाज, मवेशी, दस्तकारों द्वारा बनाई गई वस्तुओं के रूप में या नकद के रूप में कर लिया जाता था। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमिकर था। उत्पादन का छठा (1/6) भाग राज्य द्वारा भूमिकर के रूप में लिया जाता था।

उस समय परती भूमि को खेती योग्य बनाया गया। खनन, धातुकर्म, व्यापार को बढ़ावा मिला। शिल्पकारों की संख्या में वृद्धि हुई। वाराणसी और मथुरा महत्त्वपूर्ण शहर थे, जहाँ कपड़े बनाए जाते थे।

राजनैतिक रूप से राजा सबसे ऊँचा पद होता था। राजा के अधीन सेनापति, मंत्री एवं अन्य अधिकारी होते थे। सभी मामलों में राजा का निर्णय अंतिम होता था। न्यायालय दो तरह के होते थे। न्याय, सेना, आर्थिक और धार्मिक मामलों का अधिकार राजा के पास होता था। राजा मुख्य सेनापति और मुख्य न्यायाधीश का भी कार्य करता था। राज्य में केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन था। केन्द्र का शासन सीधे राजा के अधीन था। प्रान्तों का शासन राजा के संबंधी, मित्र, विश्वासपात्र लोगों के हाथ में था। ये राज्य में शांति व्यवस्था बनाने और कर जमा कराने में सहयोग देते थे।

नन्द वंश का अंतिम शासक घनानन्द था। घनानन्द के समय ही सिकन्दर (327 ई.पू. से 326 ई.पू.) ने भारत पर आक्रमण किया था। घनानन्द लड़ाकू, दमनकारी तथा क्रूर राजा था। घनानन्द से उसके राज्य के लोग दुखी थे। जनसाधारण में नाराजगी और गुस्सा था। इसी स्थिति का लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने लोगों से मिलकर घनानन्द के खिलाफ विद्रोह किया। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा घनानन्द की हत्या कर नन्द वंश को समाप्त किया

गया। नन्द वंश के समाप्त होने पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध में 'मौर्य वंश' की शुरुआत की। मौर्य वंश की स्थापना में चन्द्रगुप्त मौर्य को उसके गुरु चाणक्य ने मदद की। बाद में चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री बना। चाणक्य को एक महान राजनैतिक गुरु माना जाता है।

## पाठगत प्रश्न 3.1

1. **सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए-**

   (क) जनपद एक किलाबन्द ...................... था। (शहर / गाँव)

   (ख) महाजनपदों की संख्या ........................ थी। (16 / 18)

   (ग) जनपदकाल के अवशेष ........................ में मिले हैं। (अतरंजीखेड़ा / मुम्बई)

2. नन्द वंश को किसने समाप्त किया?

   ..........................................................................................................................

3. मगध की स्थापना किसने की?

   ..........................................................................................................................

4. नन्द वंश का अंतिम शासक कौन था?

   ..........................................................................................................................

5. नन्द वंश के समय राज्य की आय का मुख्य स्रोत क्या था?

   ..........................................................................................................................

## 3.2 मौर्य साम्राज्य के अधीन मगध

आप पढ़ चुके हैं कि मौर्य साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू.-297 ई.पू.) ने की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्द वंश के अंतिम शासक की हत्या कर मौर्य वंश की शुरुआत मगध में की। चन्द्रगुप्त मौर्य की सहायता उसके गुरु और मंत्री चाणक्य ने की।

चन्द्रगुप्त मौर्य को एक बड़ी नंद सेना विरासत में मिली थी। इस बड़ी और शक्तिशाली सेना द्वारा भारत के बड़े हिस्से को जीत लिया। चन्द्रगुप्त के पुत्र बिन्दुसार (297 ई.पू.-272 ई.पू.) ने दक्षिण भारत में साम्राज्य फैलाया। बिन्दुसार ने यूनान के साथ व्यापार तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया।

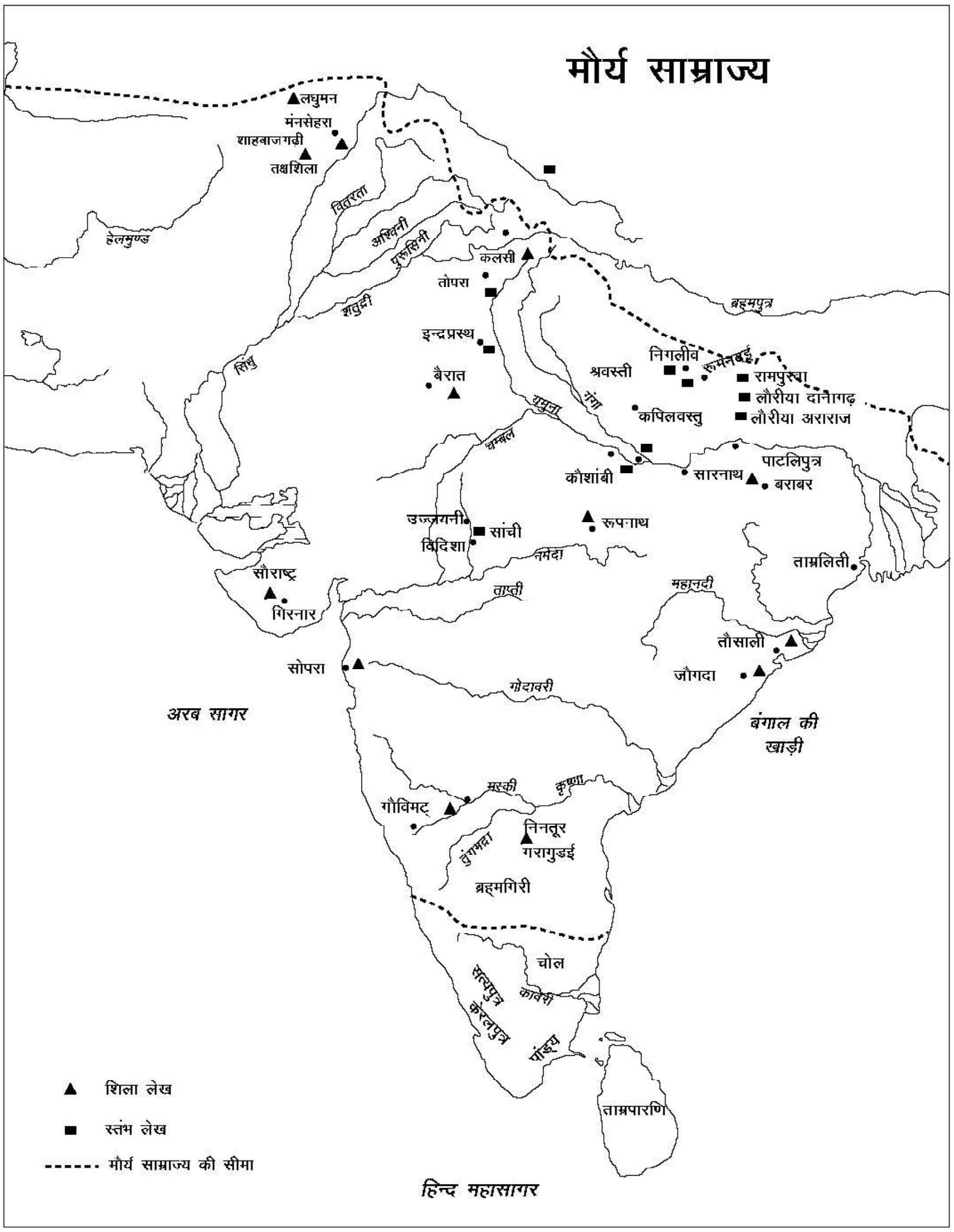


**चित्र 3.3 : मौर्य साम्राज्य**

सम्राट अशोक (272 ई.पू.–232 ई.पू.) मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। अशोक ने मौर्य साम्राज्य को सबसे अधिक फैलाया। अशोक ने 260 ई.पू. में कलिंग (उड़ीसा) पर आक्रमण कर उसे मौर्य साम्राज्य में मिलाया लेकिन कलिंग युद्ध में बड़े पैमाने पर पुरुषों की हत्या हुई। बदला लेने के लिए कलिंग की महिलाओं ने हाथों में तलवार लेकर अशोक के खिलाफ लड़ाई की घोषणा की। इससे अशोक ने अपनी युद्ध विजय की नीति को छोड़कर शस्त्र त्याग दिया। अब उसने धर्म और शांति का मार्ग अपनाया। युद्ध विजय की जगह धर्म विजय की नीति को अपनाया।

धर्म और शांति के प्रचार के लिए अशोक ने पूरे साम्राज्य में ऊँचे स्तम्भ लगवाए। विभिन्न स्थानों पर संदेश देने के लिए ब्राह्मी, खरोष्ठी और आरमेइक लिपि में अभिलेख लगवाए। अशोक ने धम्म की स्थापना कर धर्म प्रचार करवाया। अशोक द्वारा सारनाथ में बनवाये गए सिंह शीर्ष स्तम्भ को ही भारत के राजकीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया गया है।

(क) रामपुरवा स्तम्भ

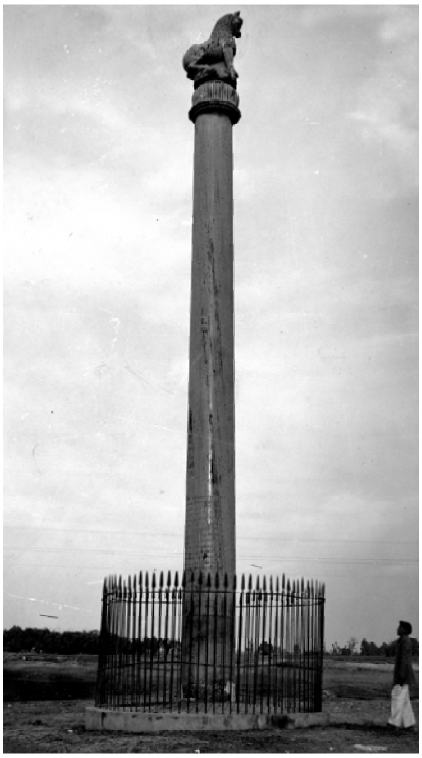

(ख) लौरिया नन्दनगढ़ स्तम्भ

(ग) सिंह स्तम्भ सारनाथ

चित्र 3.4 : अशोक स्तम्भ

अशोक ने लोगों की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। उसने सड़कों का निर्माण करवाया, यात्रियों की सुरक्षा के प्रबंध कराए, सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवाए, पानी के लिए कुएँ खुदवाए, आरामगाहों और सरायों का निर्माण करवाया, मनुष्यों और जानवरों के इलाज के लिए अस्पतालों की व्यवस्था की। मानव की भलाई करने एवं कल्याणकारी कार्यों के कारण सम्राट अशोक को 'महान शासक' कहा गया है।

अशोक ने 'धम्म' स्थापित किया। इस धम्म की निम्न विशेषताएँ थीं– करुणा (दया), दान, सच्चाई, पवित्रता और सबके साथ अच्छा व्यवहार। अशोक ने अपने स्तम्भलेख-3 में लोगों से हिंसा, अत्याचार, क्रोध और ईर्ष्या-द्वेष पर नियंत्रण रखने का अनुरोध किया है। शिलालेख-1 में पशु-हत्या पर पाबंदी लगाई है। अशोक ने विश्व में शांति का संदेश फैलाया।

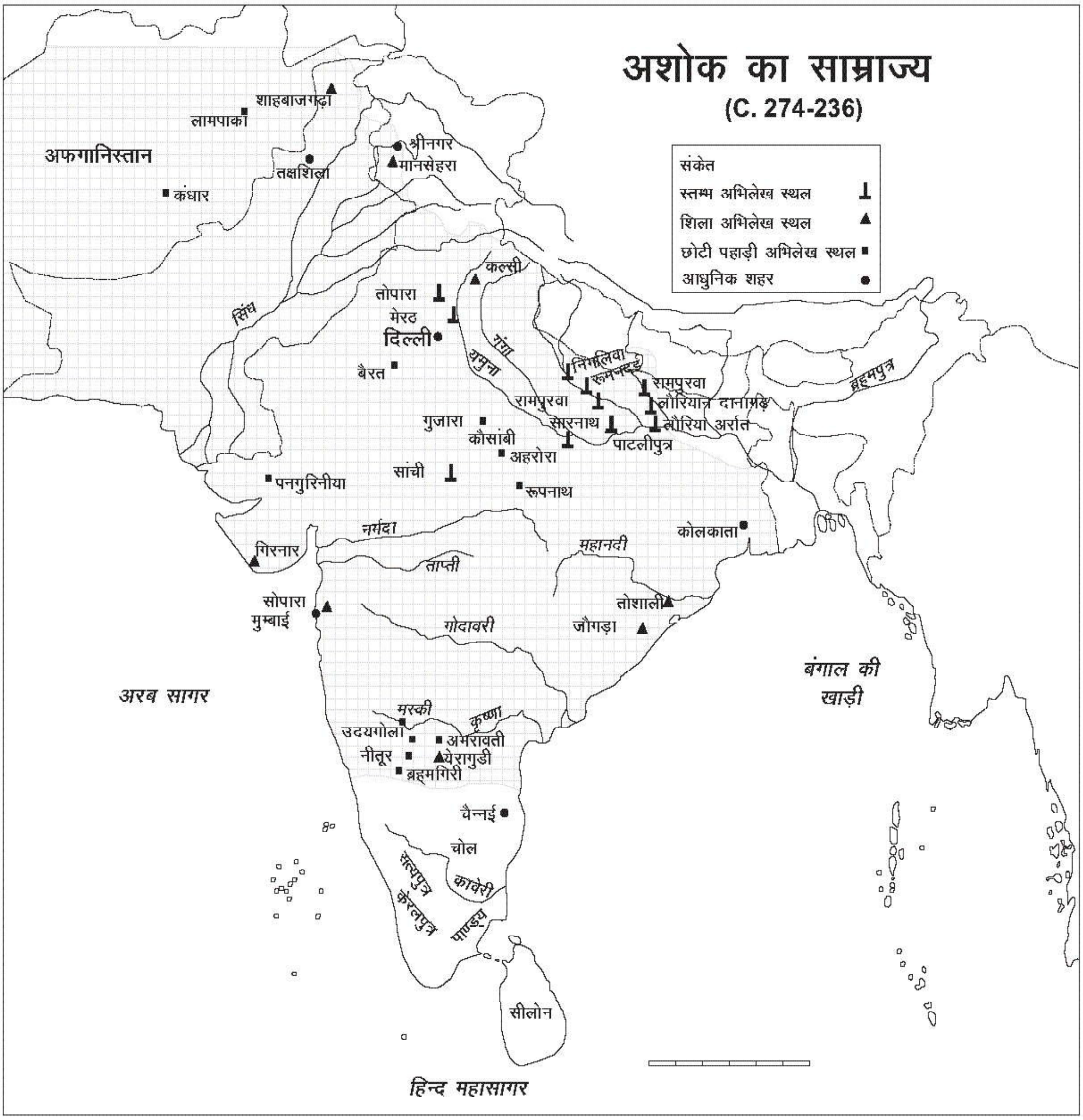


**चित्र 3.5 : अशोक का साम्राज्य**

मौर्यकालीन समाज में वर्ण–व्यवस्था को बौद्ध धर्म और जैन धर्म के विरोध का सामना करना पड़ा। फिर भी ब्राह्मण और क्षत्रिय समाज में ऊँचे स्थान पर थे। समाज में वर्ण–व्यवस्था मौजूद थी। कृषि, व्यापार तथा शिल्प–कार्य में वृद्धि होने से वैश्यों और शूद्रों की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ। शूद्रों को कृषि–कार्य और शिल्प–कार्य में शामिल किया जाने लगा।

मौर्यकाल में व्यापार, कृषि और उद्योग धंधों को बढ़ावा मिला। कृषि से प्राप्त होने वाला भूमिकर राज्य की आय का मुख्य स्रोत था। वस्त्र उत्पादन के प्रमुख केन्द्र थे– वाराणसी, मथुरा, बंगाल, गांधार और उज्जैन। खनन और धातुकर्म अन्य आर्थिक गतिविधियाँ थीं। व्यापार भूमिमार्ग और जलमार्ग दोनों से होता था। पाटलिपुत्र, तक्षशिला महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र थे, जो दूसरे भागों से जुड़े थे। पूरब में ताम्रलिप्ति (पश्चिम बंगाल) और पश्चिम में भड़ौच (भृगुकच्छ) महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह थे। बड़े पैमाने पर लोहे के प्रयोग का श्रेय मौर्य शासकों को जाता है। लोहे के उत्पादन पर मौर्य शासकों का एकछत्र अधिकार था। सेना, खेती–बाड़ी और व्यापार के लिए लोहे की अधिक माँग रहती थी।

मौर्यकाल में किसानों से भूमि कर के अलावा दूसरे कर, जैसे– पिंड कर, हिरण्य, भाग और भोग आदि लिया जाता था। मुख्य रूप से चावल, जौ, गेहूँ, बाजरा, गन्ना, दाल, मटर, तिलहन (तेल देने वाली फसल) का उत्पादन किया जाता था।

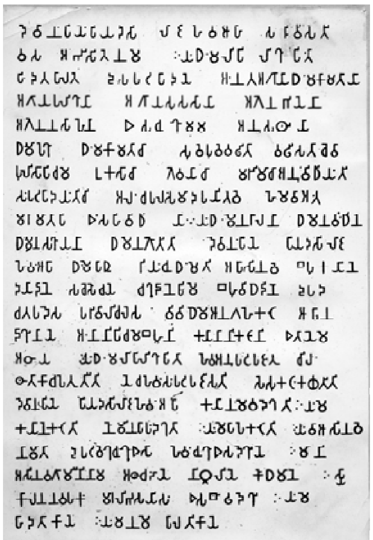

**चित्र 3.6 : अशोक का स्तम्भ लेख**

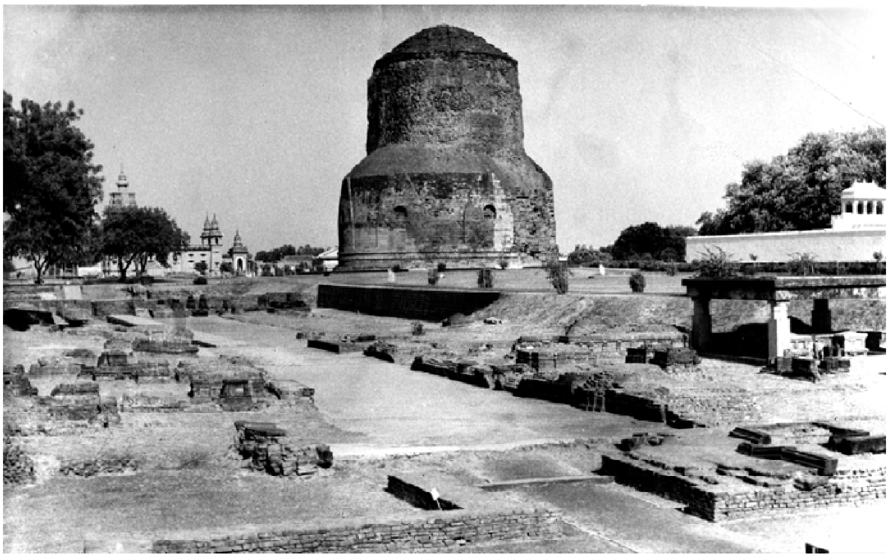

**चित्र 3.7 (क) : अशोक द्वारा निर्मित धमेक स्तूप**

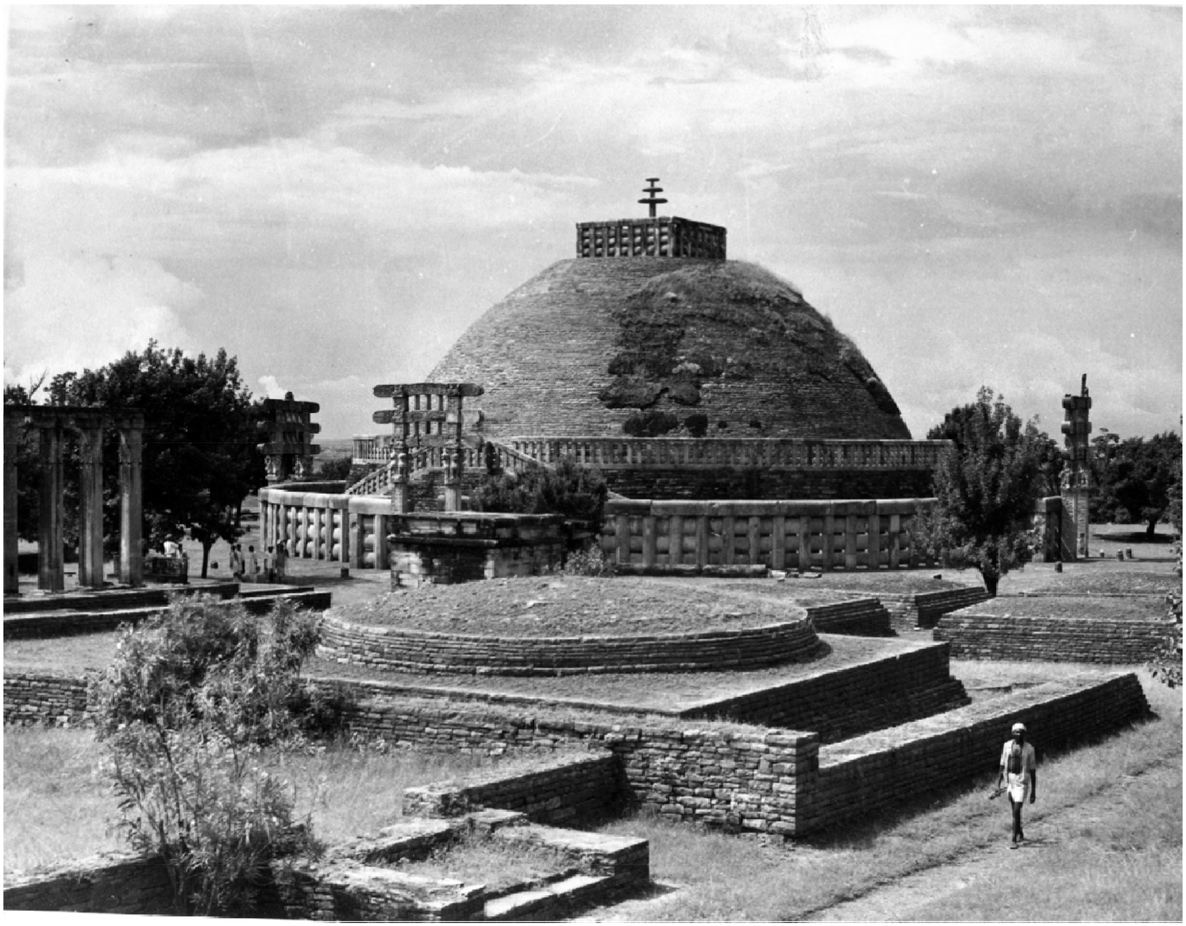

चित्र 3.7 (ख) : अशोक द्वारा निर्मित सांची स्तूप

मौर्य राजनीति और प्रशासन में राजा मुख्य भूमिका निभाता था। राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी। प्रशासन में लगान, कानून, शांति-व्यवस्था, युद्ध और धर्म सभी में अंतिम फैसला राजा ही करता था। राज्य के प्रशासन को केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन में बाँटा गया था। केन्द्रीय शासन सीधे राजा के हाथ में होता था, जबकि प्रान्तीय शासन राजा के सगे-संबंधियों और विश्वासपात्रों के हाथ में।

बाहरी आक्रमण से रक्षा और शांति-व्यवस्था सेना के द्वारा सुनिश्चित की जाती थी। न्यायालय– गाँव, प्रदेश और केन्द्रीय स्तर पर थे। ये न्यायालय दो तरह के थे– दीवानी और फौजदारी। मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। इसके अलावा चार प्रान्त थे। उत्तर-पश्चिम भारत की राजधानी तक्षशिला थी, दक्षिण भारत की सुवर्णगिरि, पूर्वी भारत की तोसली और पश्चिमी भारत की राजधानी उज्जैन थी। प्रान्तों पर नियंत्रण राजकुमारों द्वारा होता था, जिन्हें कुमार कहते थे।

पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन, पाँच-पाँच सदस्यों की छह समितियों के द्वारा किया जाता था। ये समितियाँ उद्योग, विदेश मामलों, जन्म और मृत्यु पंजीकरण, व्यापार और बाजार का संचालन और कर संग्रह करने का कार्य करती थीं।